श्रीमती रत्न कुमारी देवी - अमृत-महोत्सव

१२ दिस. १९९५

स्मारिका

स्मारिका

श्रीमती रत्न कुमारी देवी

अमृत महोत्सव

सम्पादक मंडल

डॉ. रामशंकर मिश्र

डॉ. राम दयाल कोष्टा ''श्रीकांत''

शिवनारायण तिवारी

☆

मुख्य पृष्ठ संयोजन

प्रो. यू.डी. मिश्र

सेठ गोविन्द दास शताब्दी समारोह समिति

शहीद स्मारक, जबलपुर

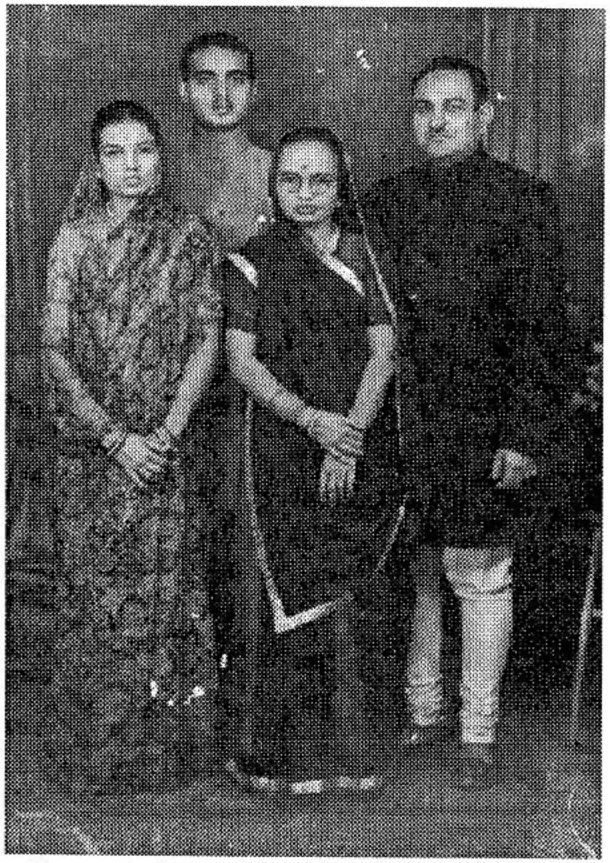

छोटी बहन पद्मा बिनानी, रत्नकुमारी जी, कुंवर घनश्यामदास जी और कुंवर लक्ष्मीचन्द्र जी बिनानी।

बिटिया का तिलकोत्सव

कुंवर लक्ष्मीचन्द्र और रत्न कुमारी विवाह के पहले की रस्म में।

प्रसंग : अमृत महोत्सव

जीवन में ज्ञान और कर्म की सम्यक्क साधना और व्यावहारिक जीवन में सामाजिक मूल्यों की संरक्षणा का कार्य एक समर्पित समाजसेवी और रचनाधर्मी के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण साधन-कर्म होता है। सामाजिक सत्य और देशात्मबोध की गरिमा को अक्षुण्य रखना किसी भी समर्पित व्यक्तित्व का प्रथम दायित्व है और इसका निर्वाह समाह, राजनीति, धर्म-दर्शन, संस्कृति आदि सभी के लिए एक ओर जहां उन्नयनकारी होता है वहां ही एक समर्पित व्यक्तित्व के लिए प्रेरणास्पद भी हो जाता है। समाज एक ऐसा विराट महाफलक है जिस पर सामाजिक मूल्यों की आकृतियाँ हैं, जिस पर धर्म-दर्शन के धवलै-शुभ चित्रांकन हैं और जिस पर राजनीति की टेढ़ी-मेढ़ी रेखाएं भी अंकित हैं। इन समस्त चित्राकृतियों को पढ़ते हुए जब एक समर्पित समाजसेवी व्यक्तित्व अपनी जीवन-यात्रा आरंभ करता है तब उसका प्रस्थान बिन्दु प्रेरणा का स्त्रोत स्वतः ही बन जाता है। श्रीमती रत्नकुमारी जी ने इसी प्रस्थान बिन्दु से अपनी ज्ञान और कर्म की यात्रा आरंभ की और आज तेरासी वर्ष में भी उसी धवल समाज-फलक पर अबाध गति से चलते हुए जीवन मूल्यों के नये-नये पाथेय निर्मित करती जा रही हैं। इस निस्पृह समाज साधिका का अभिनंदन करते हुए सेठ गोविन्ददास शताब्दी समारोह समिति गर्व का अनुभव कर रही है।

श्रीमती रत्नकुमारी जी को समाज सेवा और सृजन धर्म की प्रारंभिक शिक्षा उनके यशस्वी पिता सेठ गोविन्ददास से विरासत में मिली। सेठ गोविन्ददास हिन्दी के प्रतिष्ठित नाटककार थे। साहित्य की विभिन्न विधाओं में लेखन कार्य करते हुए, जीवन और समाज के प्रति उनका दृष्टिकोण सदैव सकारात्मक रहा है। वे साहित्य मनीषी थे, वे स्वतंत्रता संग्राम के अप्रतिम सेनानी थे, वे महान समाजसेवी और समर्पित व्यक्तित्व के प्रतीक थे। उनके व्यक्तित्व की गरिमा में रत्नकुमारी जी को निरंतर प्रेरणा दी और उनके व्यक्तित्व का निर्माण किया।

रत्नकुमारी जी के सर्जक व्यक्तित्व के कई आयाम हैं। वे कांग्रेस की सक्रिय सदस्य रही हैं। भारतीय संवैधानिक इतिहास तथा संसदीय विधान की वे एकमात्र ऐसी राज्यसभा सदस्य रही हैं जिन्हें तीन बार प्रतिनिधित्व करने का अवसर प्राप्त हुआ। अपने संसदीय जीवन मे उन्होंने लोकतांत्रिक मूल्यों का संरक्षण किया और भारत की जनभावना को संसद में अभिव्यक्ति दी।

रत्नकुमारी जी आरंभ से ही साहित्यानुरागी रही हैं और जीवन के इतने लम्बे अंतराल में उन्होंने काव्य-सृजन भी किया। उनके काव्य में जीवन और समाज की शुभता और चिन्तन की गहराई है।

रत्नकुमारी जी शिक्षा के क्षेत्र में भी आरंभ से ही रचनात्मक दायित्व का निर्वाह करती आ रही हैं। वे हितकारिणी सभा की भी सक्रिय कार्यकर्ता रही हैं और आज इस विशाल शिक्षा संगठन की सभापति हैं। इस संस्था के उन्नयन में आज भी उनका रचनात्मक योगदान, शिक्षा के स्तर को निरंतर उच्चता प्रदान कर रहा है।

धार्मिक चिन्तन और अनुष्ठानों के प्रति भी उनकी अभिरुचि आरंभ से ही रही है और इस माध्यम से भी वे जनकल्याण के कार्यों के प्रति स्वयं को समर्पित कर रही हैं। ऐसी निश्छल, निस्पृह और समर्पित समाज सेविका तथा रचनाधर्मी का अमृत महोत्सव का आयोजन कर उन्हें अत्यन्त आदरभाव से सम्मानित किया जा रहा है।

इसी अमृत महोत्सव के शुभ अवसर पर यह स्मारिका प्रकाशित की जा रही है। स्मारिका में व्यक्तित्व, सृजन और सम्पर्क तीन खण्ड किये गये हैं 'व्यक्तित्व' खंड में उनके वैयक्तिक तथा साहित्यिक व्यक्तित्व के संबंध में लेख संकलित किये गये हैं। 'सृजन' में उनके दो प्रकाशित संग्रहों - अंकुर और ऋतुपर्व से कुछ कविताएं तथा एक अन्य अप्रकाशित ग्रंथ से खण्ड काव्य के अंश तथा अन्य अप्रकाशित कविताएं संकलित की गई हैं जिससे उनकी 'सृजन' धर्मिता प्रकाशित हो सके। इसी प्रकार 'सम्पर्क' में उनके सम्पर्कों की चित्रमय झाँकियाँ हैं।

आज अमृत महोत्सव के इस शुभ अवसर पर समिति माननीया रत्नकुमारी जी का अभिनंदन करती हैं और उनके दीर्घ यशस्वी जीवन की कामना करती है।

रामशंकर मिश्र

श्रीनिवास तिवारी
अध्यक्ष,
मध्यप्रदेश विधानसभा

क्र. 576/अविस/95
फोन :
कार्यालय 551646
निवास : 553148
ई-44 (45 बंगले)
भोपाल - 462 003

दिनांक : 04.12.95

संदेश

जानकर प्रसन्नता हुई कि श्रीमती रत्नकुमारी जी के जन्म दिन पर अमृत महोत्सव का आयोजन एवं एक स्मारिका का प्रकाशन किया जा रहा है।

श्रीमती रत्नकुमारी जी को राजनीतिक संस्कार एवं प्रशिक्षण अपने पिता स्व. सेठ गोविंद दास जी से मिले हैं और यही कारण है कि वे राजनीति को महज समाज सेवा का सौपान मानती हैं, पद और सत्ता का साकेत नहीं, श्रीमती रत्नकुमारी जी ने अपनी सेवा भावना संगठन क्षमता और संसदीय ज्ञान के बल पर ख्याति अर्जित की है और वे संवेदनशील किन्तु सदैव सजग और कर्मठ नेत्री के रुप में पहचानी जाती हैं, राष्ट्र को उनकी सेवाएं हमेशा मिलती रहें और वे शतायु हों यही कामना है।

प्रकाशय स्मारिका श्रीमती रत्नकुमारी जी के जीवन कर्म को सम्यक रुप से रेखांकित करने में सफल होगी ऐसा विश्वास है।

शुभकामनाओं सहित

श्रीनिवास तिवारी

रत्नकुमारी जी की काव्य-यात्रा 'अंकुर' की समकालिकता और अनुभूतियों की प्रेषणीयता

स्व. नर्मदा प्रसाद खरे

रत्नकुमारी जी का प्रथम काव्य संकलन अंकुर 1934 में प्रकाशित हुआ था। उस संग्रह में रत्नकुमारी जी के कवि व्यक्तित्व पर प्रकाश डालते हुए स्व. नर्मदा प्रसाद जी खरे ने भूमिका लिखी थी। खरे जी की यह भूमिका रत्नकुमारी जी की काव्य-यात्रा के विविध सोपानों का उद्घाटन करती है, अतः उस भूमिका को यहां प्रकाशित किया जा रहा है। सम्पादक

न जाने क्यों मैं संसार को अपना सा देखना चाहता हूँ। उसे अपनी आँखों से देखने की ही मेरी इच्छा रहती है। जब से मैंने कविता लिखना आरंभ किया तभी से मेरी इच्छा अपने मित्रों को भी अपना साथी बनाने की हुई और इसमें मुझे आशातीत सफलता भी मिली। श्रीमती रत्नकुमारी जी को भी मैंने लगातार प्रोत्साहन दिया।

उन दिनों में ''प्रेमा'' का सहकारी सम्पादक था। ''प्रेमा'' मध्यप्रान्त की पत्रिका थी। इसी नाते और इनकी प्रथम कविता ''मातृप्रेम'' को कई पत्रों में प्रकाशित देखकर मैंने इनसे लिखते रहने का आग्रह किया। इन पर इनके पिता श्री सेठ गोविन्ददास जी व हम लोगों की प्रोत्साहन प्रवृत्ति का कुछ ऐसा असर पड़ा कि ये अपने छोटे से साहित्यिक जीवन में ही प्रस्तुत संग्रह लेकर सरस्वती देवी की पद-पूजा का प्रयत्न कर सकीं।

इन कविताओं को माला रूप में रखकर इनका परिचय देने का अवसर मुझे मिला और अपने प्रोत्साहन का यह फल देखकर में प्रसन्नता से विह्वल हो गया।

मैं इस संग्रह की कविताओं का वास्तविक मूल्य अंकित कर देने की अपेक्षा उन रत्नकुमारी का परिचय करा देना अत्यन्त आवश्यक समझता हूँ जिन्होंने टूटे-फूटे भावों के रज-कणों को अपनी प्रतिभा के तेज से आभावान बनाकर रत्नकणों के रूप में परिवर्तित कर दिया है। मेरी दृष्टि में तो इनकी अपेक्षा रत्नकुमारी जी के जीवन का अधिक मूल्य है जिन्होंने अपनी अनुभूतियों को अन्धकार से

हटा कर प्रकाश में रख देने का प्रयत्न तो किया।

रत्नकुमारी जी का जन्म-स्थान जबलपुर व जन्म सम्वत् 1969 और जन्मतिथि मार्ग शीर्ष मास के कृष्णपक्ष की सप्तमी है। ये सेठ गोविन्ददास जी की पुत्री हैं। सेठ जी स्वयं अच्छे कवि, लेखक व नाटककार हैं। मध्य प्रान्त के राष्ट्रीय-कार्यकर्ताओं में सेठ जी का अपना स्थान एक ही है, सेठ जी के त्याग और देश भक्ति का स्थान इतिहास में गौरवपूर्ण रहेगा।

रत्नकुमारी जी का विवाह सहारनपुर निवासी बाबू लक्ष्मीचन्द्र जी से 28 जून सन् 1925 को हो चुका है। वे बहुत ही मिलनसार और हंसमुख हैं। लक्ष्मीचंद्र जी के ज्येष्ठ बंधु राय बहादुर सेठ खूबचन्द्र जी सहारनपुर के प्रसिद्ध रईस हैं। उनके लिए यह और भी गौरव की बात है कि उनकी अनुजबधू पुरानी परिपाटी को त्याग कर समय के साथ रही और उसने अपने जीवन द्वारा एक दूसरा आदर्श व्यक्तित्व स्थापित किया।

रत्नकुमारी जी ने अपने जीवन के उषाकाल में ही प्रतिभा-प्रभाकर के दर्शन करा दिये थे। यह इनके विद्यार्थी जीवन से स्पष्ट मालूम होता है। इन्होंने पाठशाला में केवल हिन्दी की पहिली कक्षा पढ़ी। इसके बाद 5 से 10 वर्ष की आयु तक हिन्दी का अध्ययन किया और फिर 10 वर्ष की आयु से अंग्रेजी और संस्कृत भाषा का अध्ययन तो बहुत उच्च कोटि का हुआ। इसी के प्रमाण स्वरूप "काव्य तीर्थ" की उपाधि 15 वर्ष की अवस्था में ही प्राप्त हुई जो इनके लिए बड़े गौरव की बात है।

इनका व्यक्तित्व बहुत ही उज्जवल है। सब से नम्रता का व्यवहार करना और हंस कर बोलना इनके व्यक्तित्व जीवन के आभूषण हैं। हमें इनमें स्त्री-सुलभ लज्जा और शील का अभाव, आधुनिक सभ्यता में पोषित होने पर भी, नहीं दिखा। इन्होंने सुख की गोद में जन्म लिया फिर भी ये सब प्रकार के कष्ट हंसते हुए हाथों हाथ झेलने को तत्पर रहती हैं - यह इनके राष्ट्रीय जीवन से स्पष्ट मालूम होता है।

मानव-हृदय अनुभूतियों का कोषागार है। संसार के सभी प्रकार के अनुभवों की हमारे हृदय पर अमिट छाप लग जाती है। कभी-कभी हमारे अन्तर्जगत पर बाह्य संसार का ऐसा अभाव पड़ता है कि वह विचलित हो, अपना सच्चा स्वरूप लेकर व्यक्त होना चाहता है। अन्तर्जगत के इस सत्यं-शिवं-सुन्दरम् के रुचिर रूप की झांकी ही कविता है और उस झांकी का सौन्दर्य-विकास करने वाला है कवि।

रत्नकुमारी जी का हृदय भी अपने पूज्य पिता सेठ गोविन्ददास जी के त्यागपत्र को पढ़कर प्रभावित हो उठा। उस त्याग पत्र ने उनके हृदय को कवि हृदय में परिवर्तित कर दिया और इनकी लेखनी में "मातृप्रेम" नामक कविता का जन्म हुआ जो सत्यता और सुन्दरता की मूर्ति है।

कवि पर देश-काल का प्रभाव अवश्य पड़ता है। वह जैसे वातावरण में निवास करता है, उसकी आँखों के सामने जैसे दृश्यों का उत्थान और पतन होता है उसी सांचे में उसकी भावनायें भी ढल जाती हैं और कविता भी उसी रंग में रंग जाती है। रत्नकुमारी जी के हृदय पर आर्त भारत की चीत्कारों का, पराधीनता की वेदनाओं का और राष्ट्र के लिए हंस-हंस कर प्राणों पर खेलने वालों के उत्सर्गों का ऐसा प्रभाव पड़ा कि वह राष्ट्र की आत्मा बन कर इनकी कविता-धारा से फूट पड़ा है। ये अपनी नीचे लिखी पंक्तियों में "अज्ञात शक्ति" का आव्हान कर राष्ट्र के लिए स्वयं बलिदान होने की आकांक्षा प्रकट करती हैं -

छिपी हुई ओ तेज राशि,
आ अन्तर आलोकित कर दे।
निर्बलता के सघन तिमिर में
ज्योतिमयी आभा भर दे।।
अपना भूला मार्ग खोज लूं
जिधर छिपी रत्नों की खान,
उनमें से दो एक बीन लूं
आत्मिक बल, जागृति उत्थान।।
माता के मुरझाये मुख पर
या तो देख सकूं मुस्कान,
या फिर उसके शोक हरण हित
हंस कर कर दूं निज बलिदान।।

कवि राष्ट्र के निर्माण में बहुत हाथ बटाता है। राष्ट्र के अन्धकाराच्छन्न वातावरण में हुंकार की बिजलियां चमकाना उसी का साहसपूर्ण कार्य है। जिस कार्य को महाशक्तियां भी नहीं कर सकतीं, उसे कवि पल भर में कर सकता है - उसमें वह दैविक शक्ति होती है। यदि मातृ-हृदय राष्ट्र की ओर प्रवृत्त होवे तब तो सोने में सुगन्ध है क्योंकि उसका स्वभावतः देश की ओर अधिक झुकाव रहता है। अभी तक स्त्री-कवियों में श्रीमती सुभद्रा कुमारी चौहान और श्रीमती तोरनदेवी शुक्ल "लली" राष्ट्रीय कवितायें लिखने में काफी प्रसिद्धि प्राप्त कर चुकी हैं। रत्नकुमारी जी का वैयक्तिक रूप में भी थोड़ा बहुत सत्याग्रह-आन्दोलन से सम्बन्ध रहा है। इसके साथ ही इन पर पिता के आदर्श जीवन का प्रभाव पड़ने के कारण इनकी राष्ट्रीय भावनायें और भी बलवती हो उठी हैं - और यही इनकी सबसे बड़ी

त्रिवेणी देवी विद्या मंदिर के वार्षिकोत्सव में मुख्य अँतिथि श्रीमती रत्नकुमारी जी एवं श्रीमती चन्द्रप्रभा पटेरिया, अध्यक्ष श्रीमती रत्न कुमारी देवी अमृत महोत्सव समिति।

लाटूर भूकंप क अवसर पर श्रीमती रत्नकुमारी जी ने प्रधानमंत्री सहायता कोष होतु १ लाख- पये की राशि का ड्राफ्ट प्रधानमंत्री माननीय नरसिंहराव जी को भेंट किया साथ हैं। जबलपुर युवा का के सम्मति सैनी, रमेश चौधरी तथा नरेश सूरी।

अ.भा. कांग्रेस कमेटी ( ) के कार्यकारी अध्यक्ष श्री कमला पति त्रिपाठी से चर्चारत श्रीमती रत्न कुमारी श्रीमती मंजुराय के साथ।

श्रीमती रत्न कुमारी बेटे श्री गिरीश जी और बहू श्रीमती रजनी के साथ। दोनों ओर बैठी हैं, पौत्री नन्दा आर वृन्दा।

विशेषता है। कोई कहेगा कि राष्ट्रीय कवितायें तो समय विशेष के लिए आविर्भूत होती है, कालान्तर में अवश्य ही उनका जड़ से विनाश हो जायेगा। परन्तु यह धारणा निर्मूल है, क्योंकि यह तो मानी हुई बात है कि ज्ञान की समाज के विकास के साथ प्रतिष्ठा न्यून हो जाती है परन्तु हृदय के भावों की नहीं। मनुष्य के भाव सदैव बदलते रहते हैं पर ज्ञानी नहीं - जैसे पृथ्वी गतिमान है और सूर्य स्थिर है। इसमें इससे अधिक मौलिकता शायद ही उत्पन्न हो परन्तु -

''क्यों जीवन पर पहरा है,

उस निष्ठुर अधिकारी का ?

मैं फूल नहीं छू सकती -

क्यों अपनी-फुलवारी का ?''

इन पंक्तियों में दिन प्रतिदिन मौलिकता और विशेषता दृष्टिगोचर हो सकती हैं।

राष्ट्रीय कविताओं में भी करुण-रस का संचार ही अधिक दृष्टिगोचर होता है। इसका मुख्य कारण है हमारी परवशता। जब पराधीनता की बेड़ियों में जकड़े हुए हैं तब रोने के अतिरिक्त और क्या सूझेगा ? यदि हम राष्ट्र के लिए रोते हैं, तो हमारा रोना भी गान है, क्योंकि उसमें कुछ तो जागृति की भावनायें हैं ? यह स्वाभाविक भी है, क्योंकि आदिकवि वाल्मीकि ने भी करुणापूर्ण दृश्य से प्रभावित होकर ही कविता लिखना प्रारम्भ किया था। हमारी समझ में कविता हृदय की करुण अनुभूतियों का चित्र मात्र है - जैसा कि विश्व-साहित्य में बाबू पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी ने लिखा भी है - ''इस मर्त्य लोक में जो जीवन और मरण की लीला हो रही है, मनुष्यों के हास्य में भी जो करुण-वेदना की ध्वनि उठ रही है, क्षणिक संयोग के बाद जो वियोग की दारुण निशा आती है, उसी से मर्माहत होकर कवि के हृदय से जो उद्गार निकल पड़ते हैं, वही कविता है। जिस कविता में विश्व-वेदना का स्वर नहीं, वह कविता माधुर्य से हीन है।'' भारत की वर्तमान दयनीय दशा के कारण ही मालूम पड़ता है कि रत्नकुमारी जी का हृदय व्याकुल हो उठा और इन्होंने अपना स्वरूप ही मानों इन पंक्तियों में रख दिया है -

बलिदानों की गाथा क्यों

मैं आज नहीं लिख पाती ?

अन्तर की करुण कहानी

क्यों अन्तर में रह जाती ?

माता के युगल चरण में

क्यों अरे। नहीं छू पाती ?

हुंकार भरी कवितायें -

रचने से रोकी जाती।

रत्नकुमारी जी की कविता-वेलि राष्ट्रीयता के जल को पाकर ही इस रूप में पहुंची है। इनकी राष्ट्रीयता ने कहीं-कहीं प्रकृतिवाद का रूप भी धारण कर लिया है। अभी तक राष्ट्रवाद प्रकृतिवाद का रूप रख कर केवल ''एक भारतीय आत्मा'' की कविताओं में ही बहुत ही सुन्दर रूप में विकसित हुआ है। रत्नकुमारी जी की कविताओं ने प्रकृति में जो राष्ट्र की परतन्त्रता का स्वरूप देखा है वह सुन्दर है और यह बड़े गर्व की बात है कि हमें एक नारी-हृदय में ऐसी उच्च भावनाओं का चित्र दिखाई दिया। ये निर्झर को एक परतंत्र देश का निवासी मान कर उससे कहती है -

निर्झर के स्वच्छन्द गान में

छिपी अरे। वह साध,

जिसे व्यक्त करते ही उसको

लग जाता अपराध।

कोकिल के गीतों में भी वही बात है -

कोकिल के गानों पर बन्धन

बन्धन के हैं पहरेदार,

गा-गा कर केवल बसन्त में -

वह रहती मन-मार।

एक स्थान पर माता के अश्रुकणों में इन्होंने करुणा के प्रत्यक्ष दर्शन करते हुए लिखा है -

माता के ओ आंसू-कण।

अमित वेदनाओं की माला,

हृदय चेतना हारक हाला -

अपमानों की विषमय ज्वाला,

करती है जिसमें नर्त्तन,

माता के ओ आंसू कण।

यह तो इनकी राष्ट्रीय कविताओं के सम्बन्ध में कुछ विवेचना हुई। अब हम अन्य कविताओं पर विचार करेंगे।

कविताओं में कवि का व्यक्तित्व उसी प्रकार निहित रहता है जैसे प्रभाकर की उज्जवल किरणों में सप्तरंग। जब किरणें जीवन-बूंदों में से पार होती हैं उसी समय हमें इन्द्रधनुष में अन्तर्हित रंग स्पष्ट दिखने लगते हैं - यह बात कवि की कविता के सम्बन्ध में भी कही जा सकती है। व्यक्तित्व से कलाकार की कृति कभी भी अलग नहीं की जा सकती। रत्नकुमारी जी की कविताओं में यह बात हमें स्पष्ट देखने को मिलती है। इनका व्यक्तित्व जैसा सीधा-सादा और भोला है उसी की छाप हमें इनकी कविताओं में भी दिखाई देती है। भोले संसार के साथ प्रकृति भी कुटिलता का व्यवहार करती है फिर मैंने तो मानव-रूप धारण किया है। मेरे साथ क्यों यह कृतघ्न विश्व छल न करेगा ? यही भावनायें प्रकट करते हुए इन्होंने लिखा है -

शशि अपनी उज्जवलता से
जग उज्जवल करने आता,
पर काले बादल का दल,
क्यों उसको ढंकने जाता ?
तारों से बातें करने
हंस तुहिन बिन्दु हैं आते,
पर क्यों प्रभात बेला में
तारे नभ में छिप जाते ?
दीपक को प्यार चढ़ाने
प्रेमी पतंग है जाता,
पर हंसते-हंसते उसको
क्यों अपने प्राण चढ़ाता ?
जब विश्व छला जाता यह,
क्या मैं न छली जाऊंगी ?
जिस ओर बसा भोलापन -
मैं वहीं चली जाऊंगी।

सत्यता यदि उसी के वास्तविक रूप में प्रकट की जावे तो उसमें सौन्दर्य-दर्शन नहीं होता। जिस प्रकार दैविक सौन्दर्य को पाकर भी हमें बाह्य आडम्बर द्वारा सौन्दर्य-विकास की आवश्यकता प्रतीत होती है उसी प्रकार सत्यता को कल्पना के आभूषण पहिनाने की भी नितान्त आवश्यकता है। कवि अपने अनुभूति हृदय से विश्व की अनुभूतियों को एक नवीन रूप देता है - जो कवि का व्यक्तिगत रूप होते हुए भी सबका हो जाता है और प्रत्येक पाठक कविता पढ़ते हुए यह अनुभव करने लगता है कि संसार में सचमुच ऐसा ही होता है। इस अवस्था में हमारे हृदय में जैसे भाव उठते हैं उसी रूप में व्यक्त कर देने में उनमें सौन्दर्य-सृष्टि नहीं होती। यदि हम उसी भाव को कल्पना का रंगीन परिधान पहिना देते हैं तो उसका स्वरूप और भी चमक उठता है। इसलिए कविता में कल्पना का होना आवश्यक है पर कल्पना बिना सिर पैर की न हो - उसमें तथ्य होना चाहिए - सजीवता होनी चाहिए। कल्पनाओं को अनन्त नील गगन में बिना किसी लक्ष्य के उड़ना व्यर्थ है और उससे कवि तथा संसार किसी का भी कल्याण नहीं होता। परन्तु जब कल्पना एक पार्थिव रूप रख कर आती है, तब हमारा हृदय आप से आप प्रफुल्लित हो उठता है। रत्नकुमारी जो ने अपनी "इतना प्यार" कविता में इसी प्रकार की कल्पनाएं करते हुए एक स्थान पर लिखा है -

जब तम पट में मुख ढंक राका
रोती गिरा अश्रु नीहार,
सुभग सुधाधर उसे हंसाता
कलित कलायें सभी प्रसार।
सरिताओं के जीवन पर जब
करता तपन कठोर प्रहार,
व्योम-मार्ग में उदधि भेजता
उन तक निज उर की रस-धार।

कवि में अन्वेषण शक्ति भी बड़ी प्रबल रहती है। वह विश्व-मंच पर होने वाले नित्य के अभिनयों को सतर्क होकर देखता है और यह जानने का प्रयत्न किया करता है कि ऐसा क्यों होता है। वह प्रकृति में मानवता का अनुभव कर उससे इसीलिए बातें करता है, उसमें अपनी अनन्त साधनायें, और अगणित जिज्ञासायें व्यक्त करने की चेष्टा करता है। इस प्रकार प्रकृति में मानवता के दर्शन करने से कविता की सरसता और भी अधिक बढ़ जाती है साथ ही उसमें कुछ आध्यात्मिकता भी आ जाती है। रत्नकुमारी जी की कविताओं में इस प्रकार की भावनाओं का अभी पूर्ण विकास तो नहीं हुआ, फिर भी कहीं-कहीं उनके दर्शन हो जाते हैं -

लतिका के नत आनन से क्यों
झलका अन्तर्दाह ?
तरु क्यों पत्र-अधर-कम्पन से
झरते नीरव आह ?

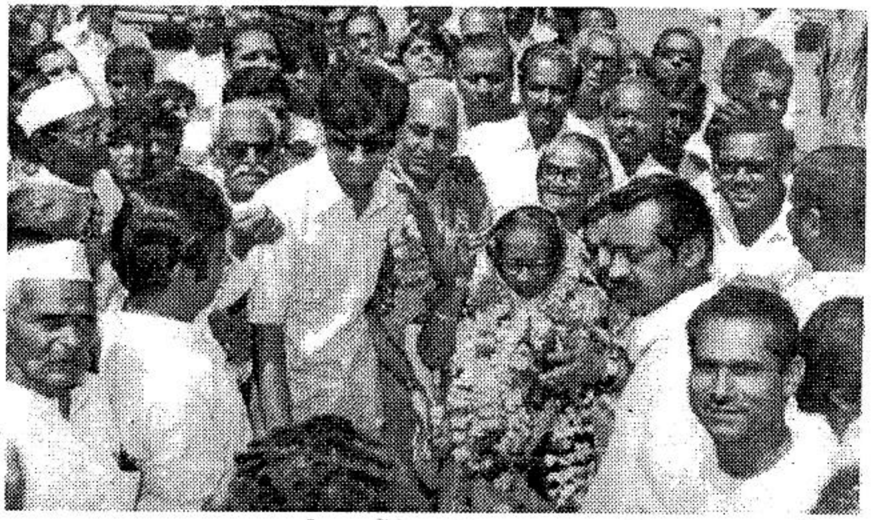

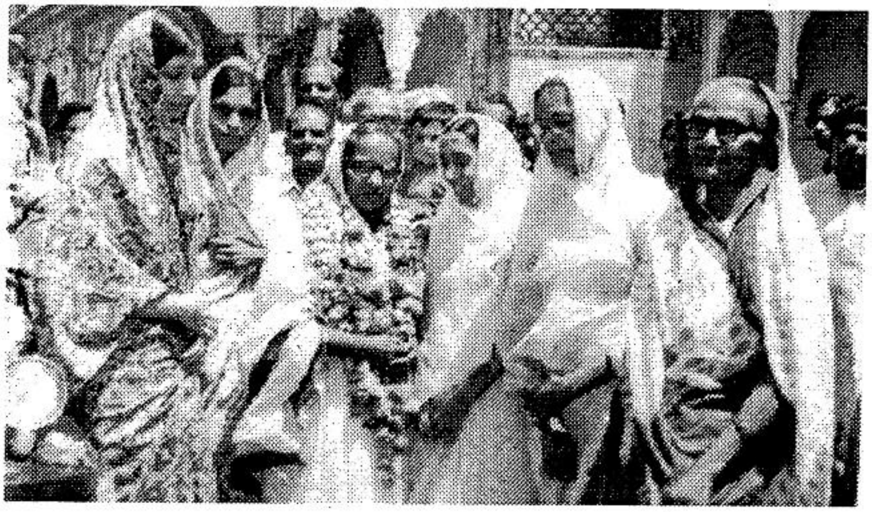

अप्रैल १९७६ में श्रीमती रत्नकुमारी जी प्रथमवार राज्य सभा की सदस्य निर्वाचित होने पर राजा गोकुलदास महल में प्रवेश कराते नगर कांग्रेस अध्यक्ष श्री डी.पी. पाठक और बाबू चन्द्रमोहन। दूसरे चित्र में परिवारजनों के बीच बायें से श्रीमती गोपाली, छोटी भाभी श्रीमती विद्यादेवी और बड़ी भाभी श्रीमती शांता देवी।

श्रीमती सुभद्रा कुमारी चौहान ने जिस प्रकार ''झांसी वाली रानी'' कविता लिखकर अमर कीर्ति प्राप्त की है, उसी प्रकार वीरांगना दुर्गावती पर कविता लिखने पर भी यश-लाभ हो सकता है। मैंने स्वयं कई बार प्रयत्न किया पर मेरे हृदय में जो चित्र बना हुआ है वह शब्द-तूलिका से ठीक वैसा चित्रित नहीं हो पाया इसीलिये मैं इस सम्बन्ध में असफल रहा। मैंने रत्नकुमारी जी से भी इस सम्बन्ध में लिखने का आग्रह किया। उन्होंने लिखा भी, परन्तु ये भी जैसा चाहती थी न लिख सकीं, फिर भी इन्होंने जो कुछ लिखा है - सुन्दर है। दुर्गावती के बचपन का चित्र खींचते हुए इन्होंने कितना कवित्वपूर्ण वर्णन किया है -

निर्झर के स्वच्छन्द गान से
तूने सीखा था गाना -
फूलों ने हंसना सिखलाया
कलियों ने मधु-मुसकाना
तूने वन-राजा से सीखा
पराधीनता ठुकराना,
तुझे पतंगों ने सिखलाया
विमल प्रेम पर मर जाना -
तू सुन्दर थी, जग सुन्दर था -
तेरे थे सब सुन्दर वेष
कभी न भूलेगा तुझको यह
हाय ! अकिंचन कोशल देश।

मेरा अनुमान है यदि रत्नकुमारी जी ''दुर्गावती'' पर एक खण्डकाव्य लिखें तो और भी अधिक सफल होंगी। इसी कविता के अन्त में इन्होंने कितनी ओजपूर्ण भावनायें प्रकट की हैं -

रानी ! तुझ पर आसफखां ने
भीषण अत्याचार किये,
तुझे मनाने को कितने ही
उसने तो उपचार किये,
स्वाभिमान पर हंस कर तूने
अपने हाथों प्राण दिये,
तुमसे रानी ! प्रलय काल तक
तेरी पावन कीर्ति जिये,
अमर रहोगी रानी तुम तो - अमर रहें तेरे सन्देश
कभी न भूलेगा तुझको यह, हाय अकिंचन कोशल देश।

मुझे विश्वास है कि हिन्दी-जगत् इस संग्रह का समुचित आदर करेगा जिससे कि रत्नकुमारी जी के ''अंकुर'' पहले किसलय और पश्चात् पुष्पों में प्रस्फुटित होकर साहित्य वाटिका को सुशोभित कर सकें।

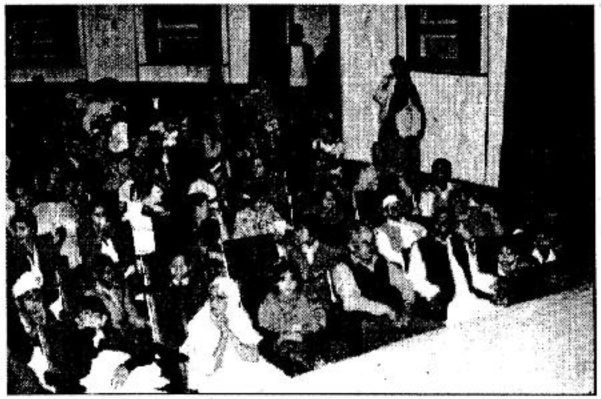

शहपुरा ब्लाक ग्राम नोनी में गांधी जयंती पर मार्ग निर्माण हेतु श्रमदान में भाग लेने जाती हु ' राज्य सभा सदस्य श्रीमती रत्नकुमारी जी साथ मे हैं सुरेन्द्र चौधरी, शिवराम पटैल, सूरजचन्द जैन, भगवतगु एवं शिवनारायण तिवारी।

श्रीमती रत्नकुमारी देवी महोत्सव के अन्तर्गत कुंवर लक्ष्मीचन्द्र अंतर शालेय सामूहिक गीत, नृत्य प्रतियोगिताओं के पुरस्कार वितरण कार्य क्रम की मुख्य अतिथि श्री रत्नकुमारी जी।

नव भारत के संपादक श्री कालिका प्रसाद दीक्षित, डा. जे.पी. शुक्ला आदि के बीच श्रीमती रत्न कुमारी।

रत्नकुमारी जी की काव्य साधना और जीवन-चिन्तन

- डॉ. रामशंकर मिश्र

महाकाल की दृश्यावलियों को सहेजना, महायात्रा के पदचिन्हों को पढ़ना, भौतिक जगत् के महारूप के साथ अपने जीवन में उद्धुत प्रातिभ बिम्बों एवं प्रतिछायाओं के प्रतिरूपों का सम्बन्ध स्थापित करना, यथार्थ की अलंकृत अनअलंकृत रंग भूमियों का साक्षात्कार करना, महारूप का गढ़ना और मन तथा हृदय के अपार्थिव भाव सत्य के साथ जीवन के महाबोध का समीकरण कर सम्प्रेषण का महासेतु तैयार करना अत्यन्त दुष्कर रचना कर्म होता है। किन्तु एक रचनाधर्मी अपने विचारतंत्र से निःसृत संवेदनात्मक ध्वनि-रूपों का जब साधारणीकरण कर, उन्हें यथार्थ के महासत्य से सम्बद्ध कर देता है, तब अभिव्यक्ति का जन्म होता है। भावप्रवण मन में जब आत्मप्रकाशन तथा आत्म प्रस्तुतियों की उत्कट भावना जन्म लेती है, तब अभिव्यक्ति लयात्मक रूप धारण कर लेती है। विचार-बिन्दु, प्रतीक से बिम्ब की यात्रा करने लगते हैं और एक रचनाधर्मी, कवितामय होकर अपने संचित जीवनानुभवों की अभिव्यंजनाएं करने लगता है। भावों की लयबद्ध यात्रा ही तो कविता है। काव्यान्वेषिका रत्नकुमारी जी ने शब्दों की यही यात्रा सम्पन्न की है। अर्थ की लयों से उनके कवि-व्यक्तित्व का निर्माण हुआ है। जीवन के बयासी वर्ष-पद उनके सार्थक जीवन और लगभग साठ सृजन-वर्ष उनकी रचनाधर्मिता के ऐसे शब्दकित तथा रेखांकित पृष्ठ हैं, जिनमें सुख-दुख, उल्लास-करुणा, प्रेय-श्रेय, और कथन-अकथन सभी कुछ तो हैं जो उनके गीतों में उभरकर अभिव्यक्त हुआ है।

जीवन को लयात्मक और छंदबद्ध रूप में देखने की प्रेरणा संभवत: उन्हें अपने यशस्वी पिता सेठ गोविन्ददास से मिली होगी। साहित्य की अनेक विधाओं में साहित्य-प्रणयन तो सेठ जी ने किया ही, किन्तु हिन्दी संसार में उनकी प्रतिष्ठा एक प्रत्तिष्ठित नाटककार के रूप में हुई। सेठ जी की सृजन शीलता के नैरंतर्य को रत्नकुमारी जी देखती रही हैं और मानसिक रूप से रचनाधर्म के अनुपालन का प्रयत्न आरंभ ही से करती रही हैं। नाट्य कथा भूमियों का गीतात्मक अनुचिन्तन संभवत: उन्होंने इसी समय किया होगा। यही कारण है कि उनके गीतों में नाट्य दृश्यावलियों के अनुरूप - विकासशील भाव - स्थलियां हैं। उनके गीतों का अनुशीलन करते हुए ऐसा प्रतीत होता है कि जैसे उनका तरल हृदय भावानुभूतियों का कोई छोटा सा विश्वकोष ही हो।

रत्नकुमारी जी की काव्यधर्मिता के प्रतीक, उनके दो काव्य संग्रह हैं। अंकुर और ऋतु पर्व। इन दोनों काव्य-संकलनों के गीत और विचारात्मक कविताएं, उनकी भिन्न-भिन्न मानसिक स्थितियों में संचित अनुभूतियों के छंदबद्ध अभिव्यंजन का आभास कराने में समर्थ हैं।

रत्नकुमारी जी ने काव्य रचना जिस समय आरंभ की थी, वह हिन्दी साहित्य का छायावाद तथा रहस्यवाद का काल था। इस काल में जीवन के यथार्थ को भी भावपरक रूप में ग्रहण किया जाता था। भावानुभूतियों के संचयन तथा अभिव्यक्तिकरण में संगोपन तथा अंतर्मुखता थी। अदेखे शून्य में रहस्य की परतों को अनावृत करते रहने की काव्य प्रक्रिया प्रस्तुत थी जो निरंतर अप्रस्तुत का अन्वेषण करती रहती थी। अपने युगीन काव्य सत्य से एक रचनाकार विमुख भी नहीं रह सकता। रत्नकुमारी जी के काव्यचिन्तन पर छायावाद रहस्यवाद के अनुचिन्तन तथा भाव- विधान का प्रभाव पड़ा था और उन्होंने भी छायावादी काव्य परिवेश में अपनी काव्यानुभूतियों की अभिव्यंजनायें की हैं। जीवन की विभीषिकाओं को उन्होंने सहज होकर स्वीकार किया और अपने धैर्य की धरा को उर्वर बनाते हुए उन्होंने "सरस कैसे" कविता में इस प्रकार काव्याभिव्यक्ति सम्प्रेषित की -

भीम भारी रूक्ष कृष्ण कड़े कड़े,
उपल तेरे अंग पर अगणित पड़े।
हैं कहीं प्राचीर सी तरू-श्रेणियां,
झाड़ियां हैं गुंथ गई ज्यों वेणियां।

☆☆☆

ईश ! अब तो श्रान्त ये पद - प्रान्त हैं,
लग्न से विजड़ित बने क्लम - क्लान्त हैं,
किन्तु करना पार, हे गिरि ! है तुझे,
क्या करूं ? कह ! दीर्घकाय ! बता मुझे।

☆☆☆

बाह्य आकृति तो भयावह गिरि अहो।
किन्तु है अन्तर सरस कैसे, कहो ?
धन्य हैं वे दृढ़व्रती प्रण में अटल,
नेत्र जिनके स्नेह से रहते सजल।
(अंकुर पृष्ठ 44-45)

जीवन के संघर्षों की यात्रा करते हुए रत्नकुमारी के कवि व्यक्तित्व ने अनुभव किया है कि अश्रेय के अंतर में श्रेयं, संघर्ष के अंत: में समाधान, प्रश्न के हृदय में उत्तर और बाह्य कठोर दृष्टा पर्वत के अंतर में स्नेह, ममता, करूणा और उर्वराशक्ति का सरोवर प्रतिष्ठित हैं। यह दृष्ट पहाड़ विभीषिका से भरापूरा तीक्ष्ण प्रश्न नहीं, विकासशील संस्थितियों से अलंकृत उत्तर है, समाधान है। प्रकृति के इस विराट रहस्य को सौन्दर्यमयी परिषाभा ही रत्नकुमारी जी ने दी है। रत्नकुमारी जी के ऋतुपर्व संग्रह की कविताओं का अनुशीलन करते हुए ऐसा प्रतीत होता है, जैसे उन्होंने प्रकृति सत्य के मध्य समरूपता स्थापित करते हुए अपने आत्मनिवेदन में लिखा भी है कि "देहिनोस्मिन्यथा देहे कौमारं यौवनं जरा"। यह पंक्ति शरीर के समान ऋतुओं के रूप में प्रकृति पर भी आधारित होती है। चेतना अनजाने ही इस परिवर्तन में किसी एक चिरंतन सत्य की अनुभूति करने लगती है। प्रकृति के परिवेश में यद्यपि परिवर्तन पर परिवर्तन होते हैं, परन्तु मूल में तो एक ही धारा प्रवाहित है। क्या ये परिवर्तन इस कारण नहीं हैं कि रमणीयतायाः। स्पष्ट है कि रत्नकुमारी जी ने प्रकृति के अंतर में निहित निरन्तर विकासशील रूप को ही देखा है। प्रकृति की बसंत मालिका, ग्रीष्म की लयनिर्देश करती कांपती झंकार, पावस की तमपट पर दामिनी - द्युति की धवलिमा, शरद का शारद गगन और विहंसती कौमुद, हेमन्त की उज्जवला हिम श्रृंखलाएं तथा शिशिर की द्वन्द्व विमुक्त आत्मजयी भाव-कृतियों ने उनके काव्यानुशीलन तथा प्रकृति निरीक्षण की सूक्ष्मता को भावगत एवं वस्तुगत, दोनों ही आधार दिये हैं। रत्नकुमारी जी ने भाव जगत से काव्यानुभूतियों का संचयन करते हुए प्रकृति के नवोन्मेष को भी देखा है और समय के कर्मवादी स्वरूपों के भी दर्शन किये हैं। ऐसे अवसरों में उनकी भाव-भंगिमाएं, समय तथा देशकाल के उन्नयन का संकेत देने लगती हैं। ऋतु पर्व में संकलित कविता "*श्रमफल*" इसका सार्थक् उदाहरण है जिसमें उन्होंने जीवन की शुभता की कल्पना करते हुए जनमानस के परिष्कार का आव्हान किया है - यथा

काल की तूली प्रकृति में रंग भर देती जमी।
रंग रस में, जब फलें फल,
मधुबने, जब अम्लता गल,
सुरस रस में जगत डूबे, मुदित मन में हों सभी।
देश का तारूण्य जागे,
अलस जड़ता दूर त्यागे,
श्रम निरत अर्जित करें, भूमध्य से धनधान्य खाने,
विज्ञान विद सहकर्म का हो,
कलह कटुता हृदय से धो,
एक ही परिवार सम, निज देश के सब वर्ग मानें।

इस तरह जनमानस को मातृप्रेम और सामाजिक शुभंता की ओर उन्मुख होने का आव्हान इन पंक्तियों में अभिव्यक्त है। जीवन की शुभता और आदर्शों के हिममय उज्जवल रूपों ने कवियत्री को सदा ही आकृष्ट किया है किन्तु ऐसे समय जब वे प्रकृति के सौन्दर्य का निरूपण करती हैं तब उनकी अभिव्यंजना अत्यंत प्रभविष्णु और अलंकृत हो जाती हैं। इस प्रसंग में हिममय आदर्श, की ये पंक्तियां द्रष्टव्य हैं -

"मुकुट सत्वमय, विग्रह रजमय, तममय, श्यामल खोह ललाम"
भूतमयी माया में अविचल, स्वयं प्रभा विकसित अभिराम,
संध्या चली प्रतीची उन्मुख, द्रुत समेट स्वर्णिम परिधान,
हीरक शीश फूल, चूड़ा में दमका नव तारा द्युतिमान,
ज्योत्सना में, हिमराशि सुन्दरी, अवगाहन करती स्वच्छंद,
अंग अंग से झर झर झरता उज्जवलता निर्झर मय आनंद"

इन पंक्तियों में प्रकृति का अलंकृत रूप अभिव्यंजित तो है ही, इसके साथ ही जीवन के प्रति आशावादी दृष्टिकोण भी सांकेतिक रूप में अभिव्यक्त है।

इत्यलम ! रत्नकुमारी जी की काव्य यात्रा के सारे पाथेय प्रकृति की अलंकृत वनस्थलियों में रचे बसे हैं जहां पर भावनाओं का उन्मेष है, वहां पर व्यक्ति और समाज की शुभता के संकेत हैं और भाववादी धरा पर कर्मवाद की सचित्र प्रस्तुतियां हैं। यह एक सहज सफल काव्ययात्रा है। जीवन उनके लिए श्रेय ही बना रहा है बीते हुए कल में भी और आज के वर्तमान में भी। ❑ ❑

हितकारिणी सभा कम्प्यूटर कक्ष का उद्घाटन करते हुये श्री कमलनाथ जी
एवं श्री प्रणव मुखर्जी

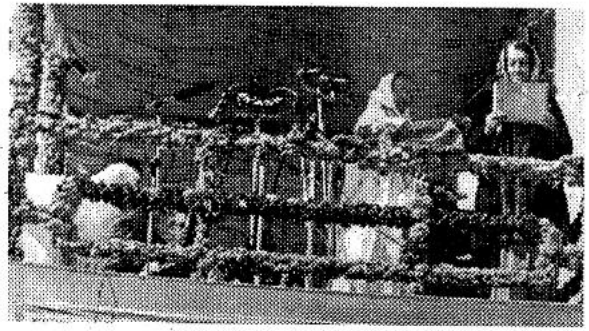

हितकारिणी सभा शताब्दी समारोह पर सभापति के रूप में मुख्य अतिथि
प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गाँधी का स्वागत करते हुये।

सृजनधर्मी व्यक्तित्व : श्रीमती रत्नकुमारी देवी

पं. हरिकृष्ण त्रिपाठी

महाकोशलीय काव्याकाश को जिन नक्षत्रों ने अपनी प्रज्ञा-प्रभा से आलोकित किया है उनमें श्रीमती रत्नकुमारी देवी का अपना एक स्थान है। उनके कविता संग्रह अंकुर 1934 में और ऋतुपर्व 1978 में प्रकाशित हुए थे। इनके अतिरिक्त भी उन्होंने स्फुट रचनाएं की हैं जो विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से हिन्दी जगत के सामने यथा समय आती रही है। उन्होंने अपने स्वनामधन्य पूज्य पितृचरण स्व. सेठ गोविन्द दास जी के अनेक नाटकों के गीतों की भी रचना की है। इस समग्र काव्य-कृतित्व के माध्यम से उनका व्यक्तित्व एक सृजनधर्मी और विचार प्रभृत रचनाकार के रूप में विकसित और प्रभावित हुआ है।

वस्तुत: विचारशील रचनाकार का विकास उसके सामाजिक परिवेश, अनुवांशिक संस्कार तथा चित्तवृत्ति की भावधारा के आधार पर ही होता है। इस विचार के अनुसार श्रीमती रत्नकुमारी देवी के संस्कार एक ओर राजा गोकुलदास महल के आभिजात्यपूरित वातावरण और वल्लभकुलीय आस्तिक भावना से प्रभावित हुए तो दूसरी ओर यशस्वी और राष्ट्रकर्मी पिता के राष्ट्रीय विचारों से उनकी चेतन उद्भुत हुई। घर पर ही की गई निजी शिक्षण व्यवस्था एवं स्वाध्याय के द्वारा उसे और अधिक परिपुष्ट किया गया।

कहना न होगा कि देश, काल और परिस्थितियां सृजनधर्मी रचनाकार के मन को प्रभावित करते हैं। कवियित्री के रूप में रत्नकुमारी जी पर भी इनका उचित प्रभाव पड़ा है। उनका सृजन-क्रम सन् 1931 ई. से आरम्भ होता है। हमारे राष्ट्रीय जीवन में यह काल उथल-पुथल से भरा वह समय था कि जबकि देश में सविनय अवज्ञा आन्दोलन अपने पूर्ण उत्स पर था और रत्नकुमारी जी का परिवार भी इन राष्ट्रीय गतिविधियों में पूर्ण रूपेण संलग्न था। फलत: प्रथम संग्रह ''अंकुर'' की रचनाओं में तत्कालीन राष्ट्रीय भावधारा का प्रच्छन्न प्रभाव स्पष्ट परिलक्षित होता है। माता के अश्रु कण, रानी दुर्गावती के प्रति, खोलें माता के बंधन, पंगु लेखनी, मातृप्रेम आदि कविताएं कवियित्री की इन्हीं भावनाओं को विम्बित करने वाली हैं। सच तो यह है कि राष्ट्रीय जीवन का निर्माण भी ऐसी ही भावोत्पन्न कविता रचनाओं से होता है। रत्नकुमारी जी ने यथासंभव सचेष्ट रहकर समय के साथ अपने विचार प्रवाह को अग्रसर किया है।

''अंकुर'' उनका पहला काव्य-संग्रह है जिसमें 28 कविताएं संकलित हैं। इन कविताओं में रचनाकार का आरंभिक कवि रूप प्रस्फुटित हुआ है। भावनाओं की गहराई और अभिव्यक्ति का शिल्प उसके कवि कर्म की कुशलता को उजागर करता है। युगीन शिल्प-विधि का संयोजन कर कवियित्री ने अपने सृजन प्रवाह को समय की प्रवृत्तियों के साथ अनुबंधित कर आगे बढ़ाया है।

वस्तुत: श्रीमती रत्नकुमारी जी का काव्य विकास छायावादी युग में हा हुआ। यह एक अलग प्रश्न है कि उन्होंने वैचारिक धरातल पर युगीन वादों के परिवेश से अपने को संग्रहित नहीं किया, किन्तु उनके काव्य शिल्प और शैली में तत्कालीन काव्य-प्रक्रिया की छाप विद्यमान है। छायावादी कवियों ने प्रकृति के अनंत कार्य-व्यापार को प्रतीक-संकेतों के रूप में ग्रहण किया है और उनके माध्यम से ही अपनी विचार-वल्लरी को सजाया-संवारा है। रत्नकुमारी जी के काव्य में भी यही प्रवृत्ति परिलक्षित हुई है। ''रानी दुर्गावती के प्रति'' नामक कविता में उन्होंने रानी का चित्र प्रस्तुत करते हुए प्रकृति प्रतीकों को इस प्रकार संवारा है : -

निर्झर के स्वच्छंदगान से
तूने सीखा था गाना,
फूलों ने हँसना सिखलाया
कलियों ने मधु-मुस्काना,
तूने वन-राजा से सीखा
पराधीनता ठुकराना,
तुझे पतंगे ने सिखलाया
विमल प्रेम पर मर जाना

हितकारिणी सभा के पदाधिकारियों के बीच म.प्र. के मुख्यमंत्री माननीय मोतीलाल दोरा साथ में श्रीमती रत्न कुमारी।

राष्ट्रीय शिक्षा संगोष्ठी पर श्रीमती रत्न कुमारी मुख्यमंत्री माननीय मोतीलाल दोरा के साथ दाहिने से श्री चन्द्रमोहन, श्री श्रवण कुमार पटैल, श्री अजय मुशरान, श्रीचन्द्रकुमार भानोट।

श्रीमती रत्नकुमारी देवी अमृत महोत्सव के अवसर पर आयोजित अ.भा. कवियत्री सम्मेलन (गीत गंगा) में श्रीमती गोपाल जी, रत्नकुमारी देवी राष्ट्रीय कवियत्री श्रीमती एकता शबनम से सम्मान ग्रहण करते हुये। शहीद स्मारक भवन दिनांक १२ दिसंबर ९५।

और "निराशा" में –

विश्वासों की झंझा झकोर,
अविरिल जल सींचे नयन कोर,
तू सिहरित कम्पित, विधि अधीन,
ओ मेरे झिलमिल दीप क्षीण।
हे वारिद में विद्युत विलास, जल निधि का वह वड़वाग्नि लास,
क्या तू जल सकता है स्नेह हीन ? ओ मेरे झिलमिल दीप क्षीण।

सजग रचनाकार समय की प्रवृत्तियों से अनुप्राणित होकर युग के वैचारिक प्रवाह से ही रचनात्मक ऊर्जा ग्रहण करता है। रत्नकुमारी जी के जीवन के आरंभिक वर्ष देश की तत्कालीन राजनीतिक प्रवृत्तियों के उद्वेलन से प्रभावित और परिचालित रहे हैं क्योंकि उनका पारिवारिक परिवेश राष्ट्रीयता की उस लहर से ओत-प्रोत और स्नात रहा है। स्वाधीनता संग्राम के संघर्ष काल में देशभक्तों के जीवन-मरण की लीला ने उनकी वेदना को कुरेदा और करुणा को जगाया है। उनकी करुणा "क्यों" नामक रचना में इस प्रकार व्यक्त हुई है : –

बलिदानों की गाथा में,
क्यों आज नहीं लिख पाती ?
उर की यह करुण कहानी
क्यों उर ही में रह जाती ?
माता के युगल चरण में,
क्यों नहीं अरे छू पाती ?
हुंकार भरी कविताएं
रचने से रोकी जाती ?

राष्ट्रीय भावधारा की रचनाएं भले ही युग विशेष की प्रकृति की द्योतक कही जावें, किन्तु व्यापक काव्य-प्रवाह में उनका भी अपना महत्व है ही। रत्नकुमारी जी के काव्य-साहित्य में इस प्रकार की रचनाओं का परिमाणाधिक्य न होने पर भी उपलब्ध सामग्री उनकी काव्य-प्रकृति को दर्शाने में सक्षम है।

एक लम्बे अंतराल के बाद कवयित्री का दूसरा संकलन "ऋतुपर्व" सन् 1978 में हिन्दी जगत् के काव्य-रसिकों के सामने आया। अब तक खड़ी बोली हिन्दी कविता में शिल्प और विषय-वस्तुगत बहुत परिवर्तन हो चुका था, किन्तु उन्होंने अनुभवजन्य प्रबुद्धता और प्रौढ़ चिंतनधारा के साथ जीवन के विचार-फलक को नयी भंगिमा प्रदान की। उनकी आस्तिकता प्रधान प्रकृति ने जड़ और चेतन के परस्पर संबंधों में चिरंतन सत्य की अनुभूति जाग्रत की। वे कहती हैं – "चेतना अनजाने ही इस (प्रकृति) परिवर्तन में किसी चिरंतन सत्य की अनुभूति करने लगती है। प्रकृति के परिवेश में यद्यपि परिवर्तन पर परिवर्तन होते हैं परन्तु मूल में तो एक ही धारा प्रवाहित है।" इस अभिप्राय से उनके वैचारिक संसार की उदात्त सत्ता और रचनाओं में उसका प्रतिफलन उस सत्य की खोज के रूप में ही दीख पड़ता है। प्रकृति के राग से अनुप्राणित होकर जीवंत सृष्टि के कार्य व्यापार से प्रतीक ग्रहण करते हुए उन्होंने अपनी कोमल भावनाओं को स्फुरित किया है। विषमय व्याली में जीवन की तटस्थवृत्ति का चित्रांकन इस भांति हुआ है : –

वह अतीत का कच्चा घट,
तू कर मत यों अब खाली।
सरल राग अंकन से उभरी,
अंतर्पट पर छांह।
जीवन के कितने प्रहरों को,
पकड़ चलेगी बांह ?
मृदु बंधन के तार तोड़ अब
पाल न विषमय व्याली।

काव्य सृजन के अतिरिक्त रत्नकुमारी जी ने कथा-सृजन में भी रुचि ली है। उनकी कृतियों में युगीन विचारबोध और आदर्शवादी भावधारा का सुंदर समावेश हुआ है।

बहुविध व्यस्तताओं और विविध राजनीतिक-सामाजिक प्रवृत्तियों में सक्रिय रहने के कारण कदाचित् उनका सर्जकमन सक्रिय रहकर अधिक सृजन भले ही न कर सका हो तथापि उनकी उपलब्ध रचनाएं उनके व्यक्तित्व को उजागर करने में पर्याय सक्षम हैं।

श्रीमती रत्नकुमारी देवी अपने समय के साहित्य और राष्ट्र की मुख्य भावधारा की संवाहिका के रूप में एक सफल सर्जिका हैं और उनका व्यक्तित्व अपने वैशिष्ट्य के लिये सदैव समाहत होता रहेगा।

सेठ गोविन्ददास जन्म महोत्सव में मुख्यमंत्री श्री अर्जुन सिंह के साथ रत्न कुमारी जी।

सेठ गोविन्ददास शताब्दी समारोह में म.प्र. राज्यपाल श्री मोहम्मद शफी कुरैशी के साथ १६ अक्टूबर १९९५।

बाबू मनमोहनदास हित. कन्या उ.मा. शाला, दीक्षितपुरा के वार्षिकोत्सव में बायें से श्री प्रभुलाल करैया, श्री रामकिशोर अग्रवाल, कुलपति डा. एस.पी. कोष्टा मुख्य अतिथि म.प्र. शासन के लोक स्वास्थ्य मंत्री ठा. हरवंश सिंह जी, श्रीमती रत्न कुमारी जी तथा श्रीमती सुशीला दीक्षित।

रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय में श्रीमती रत्नकुमारी साथ में हैं कुलपति श्रीकांति चौधरी डा. जे.पी. शुक्ला एवं डा. एस.पी. दुबे।

निर्विवाद नेत्री श्रीमती रत्नकुमारी

- श्यामसुन्दर सुल्लेरे

देश के सुप्रसिद्ध राजा गोकुलदास परिवार में जन्मी श्रीमती रत्नकुमारी देवी ख्यात साहित्यकार, नाटककार, राजनीतिज्ञ, भारतीय लोकसभा के पिता, सांसद, समाज सेवक, गौ-हितरक्षक एवं हिन्दी एवं राष्ट्रभाषा हिन्दी के उन्नायक-प्रबल समर्थक सेठ गोविन्ददास की सुपुत्री हैं।

राजा गोकुलदास की दो पीढ़ी तक यह परिवार ब्रिटिश हुकूमत से सनदयाफ्ता और सरकार का खैरव्वाह रहा है। सेठ गोविन्ददास से प्रारंभ पीढ़ी ने इस परिवार की सरकार-भक्ति की दिशा ही बदल दी। तत्कालीन ब्रिटिश हुकूमत के विरोध में भारतीय स्वातंत्र्य आन्दोलन जो गांधी जी के नेतृत्व में जारी था, गांधी की गांधी में अपने को सम्मिलित कर सेठ गोविन्ददास ने राजपथ छोड़कर जनपथ को अंगीकार किया। उनके कदम घर-बार, पैतृक राज-सत्ता को त्यागकर आम आदमी की तरह, जनता-जनार्दन के बीच कदम मिलाकर चलने लगे। पिता द्वारा निर्मित ऐसे माहौल में रत्नकुमारी जी ने जन्म लिया और शनैः शनैः उनका बचपन और युवावस्था देश की परतंत्रता से अवगत होने लगा। पिता को आन्दोलन के दौरान तत्कालीन सत्ता द्वारा उन्हें गिरफ्तार कर जेल में डालना, देश के विभिन्न छोरों से सत्ता विरोधी भारतीय स्वातंत्र्य के रण-बांकुरों का समय-समय पर 'महल' में आना, पनाह लेना, गंभीर मंत्रणा के दौरान रत्नकुमारी जी का उपस्थित रहना जैसे माहौल ने रत्नकुमारी जी के मानस को सामंती जामा से विमुक्त कर देश भक्ति की ओर मोड़ दिया। युवावस्था में ही उन्होंने तत्कालीन ब्रिटिश सरकार के विरोध में एक महिला संगठन बनाया और उनका नेतृत्व भी किया।

वे राजनीतिज्ञों के नित सम्पर्क में बनी रहीं। देश-विदेश में घट रहीं परिस्थितियों पर उनका गहरा अध्ययन रहा। गांधी के स्वातंत्र्य-आन्दोलन की ओर उनके कदम बढ़ने लगे। पिता जेल में स्वनामधन्य अनुज बाबू मनमोहन दास, जगमोहन दास शालायी विद्यार्थी थे। समूची सम्पत्ति कोर्ट आफ वार्ड में चली गई थी। आजा दीवान बहादुर सेठ जीवनदास वृद्ध थे। ऐसी परिस्थितियों में पूरे परिवार पर दायित्व का संकट था। राजनैतिक आन्दोलनों में वे अपरोक्ष रूप से सहयोग करती रहीं और एक अभिभावक की तरह समूचे राजा गोकुलदास परिवार की व्यवस्था का उत्तरदायित्व अपने कांधों पर सम्हाल लिया। परिस्थितियों ने रत्नकुमारी जी को सोचने-समझने की गहरी आभा प्रदान की। उनका चिन्तन दरअसल दो विचारधाराओं के टकराव से होकर परिपक्व बना। परदादा-दादा पूर्ण रूप से तत्कालीन सत्ताभक्त थे। फलस्वरूप शाही सुख-सुविधाएं उपलब्ध थीं। दूसरी ओर पिताश्री को देशभक्ति जो हुकूमत विरोध का कारण बनी, अभाव, आर्थिक विपन्नता, सत्ता का कोप अनेक विसंगतियों के बीच उनका सुविधा भोगी जीवन स्वयं को कई कोणों से तराशने में सहायक हुआ।

रत्नकुमारी जी विशुद्ध वैष्णव वल्लभ कुल सम्प्रदाय में दीक्षित साध्वी महिला हैं। धर्म-कर्म में उनकी पूरी आस्था है। परमात्मा के प्रति समर्पित उनका जीवन सात्विक-विनम्रता एवं ममता का परिचायक है। यह उनका आध्यात्मिक स्वरूप है। भौतिक रूप में वे स्वस्थ मानव धर्म की पालनकर्ता है। इस धरा-धाम में दृष्टिगोचर प्राणीमात्र के उन्नयन के प्रति वे अपनी सजग निष्ठा में कार्यरत रहती है। आध्यात्मिक एवं भौतिक विचारों से परिपक्व रत्नकुमारी जी का चिन्तन सुलझा एवं विद्वतापूर्ण रहता है। घर-परिवार, समाज और राजतंत्र से ग्रहित समस्याओं के हल के प्रति उनकी विचार एवं कार्यशैली अत्यन्त ही सहज-सरल बोधगम्य होती है।

भारतीय स्वातंत्र्य युद्ध में जहां उनके पिता श्री सेठ गोविन्ददास जी घर-परिवार का मोहत्याग कर सत्ता विरोधी मुहिम में लग गए, बार-बार तत्कालीन ब्रिटिश हुकूमत द्वारा प्रताड़ित किए गये, जेल में भेजे गए, वहीं रत्नकुमारी जी ने भारतीय स्वातंत्र्य युद्ध को अपने आसपास हवा दी, चिन्गारी को जलती मशाल में परिवर्तित किया। राजा गोकुलदास महल से अत्यन्त ही गोपनीय तरीके से स्वातंत्र्य युद्ध की बागडोर सम्हाली और एक अनाम कमांडर के दायित्व को वहन किया। ऐसा कमांडर जिसका सरकारी रिकार्ड में कहीं नाम नहीं मिलता पर जन-जन के बीच में 'जीजीबाई' का सर्वप्रिय नाम आज भी आदर और स्नेह से लिया जाता है। जबलपुर जिले तथा आसपास के जिलों में 'जीजीबाई' ख्यात हो गईं। भारतीय आजादी की लड़ाई का नेतृत्व कांग्रेस के हाथ में था। जीजीबाई कांग्रेस की सक्रिय कर्मठ सदस्य बनीं। कांग्रेस के आन्दोलन को उन्होंने पूर्ण समर्थन दिया। जेल के मुहाने तक पहुंचते-पहुंचते ब्रिटिश हुकूमत ने वापस महल भेज दिया। उन्हें गिरफ्तार नहीं किया गया। परन्तु एक मानसिक प्रताड़ना तत्कालीन सरकार उन्हें पहुंचाती रही। पिताश्री की गिरफ्तारी एवं हमजोली साथियों की गिरफ्तारी से उन्हें

मानसिक क्लेश होता रहा। अनेक ऐसे अवसर आए जब वे उद्वेलित हो गईं। ऐसे अवसर पर एक नाम विस्तृत नहीं किया जा सकता, वह है उनके पति कुंवर लक्ष्मीचंद जी। अत्यन्त ही कुशाग्र एवं कूटनीतिज्ञ। कुंवर साहब ने रत्नकुमारी जी को धैर्य से मौजूदा परिस्थितियों से निपटने का संबल दिया। कुंवर साहब के संबल में उन्हें घर-परिवार, समाज तथा आसपास के वातावरण को उनकी महती आवश्यकता से अवगत कराया। उन्हें इस बात का अहसास हुआ कि सिर्फ जेल जाने से भारतीय स्वातंत्र युद्ध का साफल्य उपलब्ध नहीं हो सकता इसके लिए वर्तमान व्यवस्था को तिरोहित करने के लिए जेल के सींकचों के बाहर रहना आवश्यक है। सभी जेल के सीकचों के भीतर चले जाएं तो हुकूमत के जोर-जुल्म का मुकाबला कैसे किया जा सकता है। "जीजीबाई" भूमिगत बांकुरों की आधार बन गई और आजादी की लड़ाई में अपना उल्लेखनीय योगदान दिया। राष्ट्रीय राजनैतिक चिन्तन उनका एकमात्र लक्ष्य था।

देश स्वतंत्र हुआ। जो भूमिगत योद्धा थे वे जेल प्रमाण-पत्र धारी नहीं थे। जीजीबाई भी उनमें से एक हैं। जीजीबाई पुन: सामान्य गृहस्थ महिला की भांति अपने घर-परिवार में लग गईं। पर स्वतंत्रता युद्ध के दौरान जो घर-परिवार उनसे जुड़ गए थे, उन घर-परिवारों ने उन्हें महल के अंदर बंधकर नहीं रहने दिया। पराधीन भारत में उनका राजनैतिक चिन्तन देश को स्वतंत्र कराने में निहित था। स्वाधीन भारत में जीजीबाई देश के निवनिर्माण से जुड़ी हर समस्या के प्रति अपने चिन्तन को लगाती हैं। आज उनकी राजनीति कहिये या विचारधारा, महिला उत्थान, गरीबी उन्मूलन, अशिक्षा से साक्षरता की ओर, स्वास्थ्य, उत्पीड़न, पर्यावरण, प्रदूषण जैसी लोकसमस्याओं की ओर प्रवृत्त है।

पिता श्री सेठ गोविन्ददास, अनुज बाबू जगमोहन दास, बाबू मनमोहन दास के संसदीय एवं विधानसभा के चुनावों की वे सूत्रधार रहीं। इस प्रक्रिया के दौरान उनका संपर्क नागरीय एवं ग्रामीण अंचलों से गहरा होता गया। कार्यकर्ताओं की एक लम्बी पंक्ति उनके साथ रही। और यही कारण है कि पिताश्री और भाइयों के चुनावों में उन्हें विजय श्री प्राप्त होती रही।

सेठ गोविन्द दास एवं बाबू जगमोहन दास, मनमोहन दास एवं पति कुंवर लक्ष्मीचंद जी के निधन के पश्चात वे एकदम अकेली रह गईं। पारिवारिक ब्रजाघातों ने उन्हें हिलाकर रख दिया, किन्तु जनसमूह की मुंहबोली जीजीबाई को इस दुख से उबारने और उनकी सामाजिक, राजनैतिक सूझबूझ का सद्प्रयोग करने के लिए कांग्रेस हाईकमांड और राष्ट्रनेत्री तत्कालीन प्रधानमंत्री स्व. श्रीमती इन्दिरा गांधी ने उन्हें राजसभा सदस्य के लिए निर्वाचित कराया। राजसभा में तीन "टर्म" 18 वर्ष तक वे निर्वाचित सदस्य रहीं। राज्यसभा में तीन "टर्म" का कार्यकाल व्यतीत करने का सम्मान मध्यप्रदेश से प्रापत करने वाली संभवत: "जीजीबाई" ही हैं।

अपने संसदीय कार्यकाल में सार्वदेशिक समस्याओं पर तो अपना मत प्रकट किया ही किन्तु अपने प्रदेश व जिलों के लिए विकास योजनाओं का सशक्त प्रतिनिधित्व भी किया। समय-समय पर उन्होंने जबलपुर जिला व नगर के विकास से संबंधित प्रश्नों को राज्यसभा में उठाया। उनके राज्यसभा के कार्यकाल में एक बार तो उनका जीवन ही संकट में पड़ गया था। तेलशोधक कारखाने की स्थापना के लिए उन्होंने जबलपुर जिले में कटनी का नाम प्रस्तावित किया और अपने पक्ष में सभी दृष्टि से सबल प्रस्ताव किया। किन्तु बीना के लिए एक अन्य प्रस्ताव भी था। रत्नकुमारी जी ने मेरिट के आधार पर तेलशोधक कारखाने की स्थापना पर जोर दिया था। किन्तु क्षेत्रीयता की संकीर्णता ने उनको प्रस्ताव वापस लेने पर विवश करने की घृणित कोशिश की। अपने प्रस्ताव पर अटल रहने पर उन्हें "मौत के घाट उतारने" की धमकी दी गई। किन्तु जीजीबाई क्षेत्रीयता के दबाव में नहीं आईं और उन्होंने यही कहा 'तेल शोधक कारखाना कहां स्थापित हो यह तो केन्द्र ही निश्चित करेगा। मैं तो अपने प्रतिनिधि जिले में मेरिट के आधार पर तेलशोधक कारखाने की स्थापना की प्रस्तावक हूँ। "मेरिट" यदि बीना के पक्ष में जाती है तो मैं कोई बीना में कारखाने की स्थापना की विरोधी नहीं हूँ।' जीजीबाई की सपाट बयानी से उनके जीवन को संकट में डालने वाले भी लज्जित हुए।

जिले में लिफ्टइरिगेशन, महत्वपूर्ण शासकीय कार्यालयों की स्थापना अथवा उनके स्थानान्तरण के मामले हों, राज्यसभा में जनहित के लिए उन्होंने संघर्ष किया। मजदूर आन्दोलन एवं उनकी समस्याओं के निपटारे हेतु उनके प्रयासों की मजदूर यूनियन वाले भी आज भी उनकी प्रशंसा करते हैं।

रत्नकुमारी जी की राजनैतिक विचार धारा भले ही कांग्रेस की हो और वे एक निष्ठ कांग्रेसी हैं भी। गांधीवादी विचारधारा से जुड़ी जीजीबाई जनहित के किसी भी मामले को दलगत दृष्टिकोण से नहीं देखती। जबलपुर में दसवें "रेल्वेजोन" की स्थापना के लिए उन्होंने निर्दलीय आधार पर जबलपुर के दावे का पूर्ण समर्थन किया है।

जीजीबाई आज सामाजिक राजनैतिक क्षेत्रों में निर्विवाद एक ऐसी ममतामयी महिला हैं, जो आदरणीय हैं। उनके अमृत महोत्सव पर उनके स्वस्थ जीवन की कामना सहित शत-शत नमन। ❑ ❑

श्रीमती रत्नकुमारी : संस्कारधानी के गौरव की अनकही कहानी

डॉ. रामदयाल कोष्टा ''श्रीकान्त''

संस्कारधानी अपने आरंभिक काल से ही अतीत के क्रोड़ में न जाने कितनी प्रतिभाओं का श्रृंगार करती आयी है। साहित्य, समाज, राजनीति और सांस्कृतिक जागरण के उन्नयन में असंख्य व्यक्तियों ने यहां के संकुल पथों में विचरण कर यश:, कीर्ति अर्जित कर नगर को एक ऐतिहासिक नगर बनाने का सौभाग्य प्रदान किया है।

ऐसी ही ऐतिहासिक श्रृंखला की कड़ियों में श्रीमती रत्नकुमारी जी का नाम अप्रतिम हैं। जिन्होंने साहित्य, समाज और राष्ट्र की सेवा में अपना जीवन अर्पित करते हुए रेवा के पावन तट पर अपनी अकल्पित प्रतिभा से नारी जीवन की सार्थकता और अन्तर्निहित गुणों का प्रकाशन कर एक आदर्श तथा गरिमामय जीवन-वृत प्रस्तुत किया है।

एक कुलीन एवं वैभव सम्पन्न संभ्रान्त परिवार में जन्म लेकर यदि राजा गोकुलदास की पौत्री और सेठ गोविन्ददास की पुत्री होने का गौरव को नकार दिया जावे तो भी उनके जीवन में कहीं भी अपूर्णता का दर्शन नहीं होता। वे सहजात रूप से नारी सुलभ वृत्तियों की ऐसी धरोहर हैं, जिसमें दार्शनिक चिन्तन, भारतीय आध्यात्म और साहित्यिक मनीषा के साथ भारतीय संस्कृति और राष्ट्र प्रेम के अमूल्य मणि–मुक्तादि स्वयं प्रकाशित होकर सम्पूर्ण समाज को प्रकाशित करने में समर्थ हैं।

संस्कृत साहित्य की विदुषी होने के कारण भारतीय साहित्य पर उनकी गहरी पैठ रही है। जीवन और जगत, जीव और ब्रह्म के संबंध में भारतीय मनीषियों की जो चिन्तन धारा चली है उसे आत्मसात कर उन्होंने अपने जीवन का श्रृंगार करते हुए उनकी शाश्वत मान्यताओं को अपने जीवन में उतारने का प्रयास किया है। प्रकृति के उपादानों में किसी अज्ञात की छाया बरबस उनके जीवन में आकर्षण का केन्द्र रही है। आकर्षण की यही आँख-मिचौली ने उन्हें प्रकृति नारी की आत्मसारिका बना दिया है। परिणामस्वरूप उनके गीत जहां सामान्य अर्थ रखते हैं वहीं अलौकिक सत्ता की सांकेतिकता भी प्रदान करते हैं। इस दृष्टि से वे महादेवी जी के बहुत नजदीक पहुंच जाती हैं। वे सृजित स्वरों में कहती हैं :

एक छाया ही यहां है, और है आव्हान मेरा।
पकड़ जिसको जी रही हूँ, तोड़कर यह मरण घेरा।।

मिलन और विछोह, प्रेम और उलाहना, प्रकृति और पुरुष के इन संकेतों ने ही ''ऋतु पर्व'' जैसे काव्य-संग्रह का सृजन कराया। जिसकी भाषा उत्कृष्ट साहित्य की धरोहर बन गयी है। इसी श्रृंखला में अंकुर काव्य संग्रह और मधु संचय के साथ सेठ गोविन्द दास के नाटकों की समीक्षा कर उन्होंने हिन्दी साहित्य को अमूल्य निधि प्रदान की है, जिसका मूल्यांकन हिन्दी साहित्य के विद्वानों के लिए अभी अछूता ही रहा है।

गीतों की रचना उनका सहज सरगम है। जीवन का उद्‌गीय है। एक नाटककार की पुत्री एवं भारत के ऐतिहासिक गौरव की रक्षा करने वाले साहित्यकार की अनुगामिनी बनकर ही उन्होंने नाटक के गीतों का सृजन कर उन्हें सरस एवं मार्मिक बनाने का प्रयास किया है। इस रूप में वे एक महान कवियत्री की श्रेणी में अपने आप को प्रतिष्ठित करती है।

एक साहित्यकार की प्रतिभा को संजोये वे कुशल राजनेत्री के रूप में भी उभरकर सामने आती हैं। महलों के राजवैभव को छोड़कर जहां उनके पिता सेठ गोविन्ददास भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन, गौ रक्षा तथा हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने में संकटाकीर्ण मार्ग में चलने के लिए कूद पड़ते हैं, वहीं श्रीमती रत्नकुमारी वैभव-विलासिता का परित्याग कर जनसेवा एवं राष्ट्रीय आन्दोलनों में अपना योगदान देती हैं। इस प्रकार वे जीवन की विसंगतियों की आत्मदृष्टा स्वयं बन जाती हैं। पिताजी के स्वतंत्रता संग्राम में प्रवेश करती हुई वे उनके निर्देशानुसार स्वतंत्रता आन्दोलन को गति देती हुई भारत माता की निर्भीक पुजारिन बन जाती हैं। आन्दोलन कारियों के परिवारों का भरण–पोषण किस प्रकार हो सके इस हेतु वे अपनी सक्रियता और करूणा की अधिष्ठात्री बनकर चरखा संघ की स्थापना करती हैं और उससे होने वाली आय के माध्यम से परिवारों का भरण–पोषण करती हुई ममता की मूर्ति बन जाती हैं।

स्वतंत्रता प्राप्ति का लक्ष्य पूर्ण होने के उपरान्त भी उनकी गति में किसी प्रकार का विराम नहीं दिखायी देता। वे कांग्रेस संगठन की गतिविधियों में अपना योगदान देती हैं और जन–जन की समस्याओं के निराकरण हेतु सदा प्रयत्नशील रहती हैं। संस्कारधानी की साहित्यिक, सामाजिक तथा धार्मिक गतिविधियों में पूज्यभाव से समर्पित रहती हैं। सेवा का प्रतिफल और सफलता का अहंकार उनके जीवन में कोई स्थान **नहीं पाता**

राजा गोकुलदास प

पितामह राय बहादुर जीवनदास

श्रीमती पार्वती बाई पत्नी जीवनदास

सेठ गोविन्ददास

श्रीमती गोदावरीबाई

सेठ जी के प्रपौत्र एवँ बाबू रवि मोहन के पुत्र बाबू सिद्धार्थ मोहन

प्रति पितामह राजा गोकुलदास

सेठ जी के पौत्र एवँ जगमोहन दास के पुत्र बाबू रवि मोहन

श्रीमती इन्दु पत्नी रवि मोहन

सेठ जी के पौत्र एवँ मनमोहन दास के पुत्र बाबू चन्द्रमोहन

श्रीमती गोपाली पत्नी चन्द्रमोहन

िवार - एक झलक

श्री मनमोहनदास

श्रीमती शांता देवी

श्री जगमोहनदास

श्रीमती [illegible]देवी

सेठ जी के प्रपौत्र एवँ बाबू चन्द्र मोहन के पुत्र बाबू विश्वमोहन

श्रीमती चुन्नीबाई पत्नी राजा गोकुलदास

श्रीमती रत्न कुमारी देवी

श्री लक्ष्मीचन्द्र जी

श्री घनश्यामदास बिनानी

श्रीमती पद्मा बिनानी

धार्मिकता और सभी धर्मों के प्रति सहिष्णुता ही उनके जीवन का पर्याय है। राष्ट्र एवं समाज के उत्थान हेतु समर्पित भावना होने के कारण सन् 1976–82 एवं 88 में लगातार 18 वर्षों तक राज्यसभा की सदस्य रहीं और संस्कारधानी की समस्याओं के प्रति सदैव जागरुक रहकर सेवा में तत्पर रहीं।

समाज का ऋण चुकाने के लिए समाज सेवा भी उनके जीवन का अभिन्न अंग रहा है। शिक्षा के प्रति विशेष अनुराग होने के कारण मध्यप्रदेश की प्रमुख शिक्षण संस्था हितकारिणी की अध्यक्ष तथा महाकौशल शहीद स्मारक न्यास जबलपुर, कुचैनी मंदिर ट्रस्ट और गोपाल लाल जी महाराज ट्रस्ट की सम्माननीय सदस्य हैं। इसके अतिरिक्त भारतीय संगम कल्याण बोर्ड की सदस्य रहकर जन-कल्याण के कार्य में निरत हैं।

सम्प्रति, श्रीमती रत्नकुमारी जी बहुमुखी प्रतिभा की धनी हैं। परिवार के प्रति उनका स्नेह, वात्सल्य और प्रेम उनकी अभिजात्यवर्गीय संवेदनाओं को प्रगट करता है। स्वभाव की मृदुता, विनम्रता के कारण वे नगरवासियों के लिए आदरणीया हैं। और जीजीबाई की संज्ञा में उन्हें अभिहित कर सदैव सम्मान् दिया जाता है। उनकी जन सुलभता और सहजता सभी के लिए आकर्षण का सदैव केन्द्र रही हैं। चित्त की निर्मलता और जीवन की सत्यता की आप सदा पोषक रही हैं। उनके आचरण की शुद्धता खद्दराच्छन्न वस्त्र की पवित्रता और देशभक्ति का पर्याय है।

आप अपने यशस्वी जीवन के 83 वर्ष पूर्ण कर आज भी गतिशील हैं। आपके शतायु मंगल जीवन की कामना करते हैं।

अजर सुन्दरी

कण कण से, क्षण क्षण पर, चल युग युग के, पहुँच किनारे
अमर देश की अजर सुन्दरी, यह आशा, कब हारे।

जब से भरे जगत में रहते ये नयनों के तारे,
कब तक, पथ में, प्राण बिछायें झिल मिल ज्योति सहारे।

पलकों की छाया में, छाये बादल दल कजरारे,
मोह छोड़, मन को न डुबायें, बरबस आँसू खारे।

- ऋतु पर्व से

श्रीमती रत्नकुमारी का पारिवारिक परिवेश

पं. शिवनारायण तिवारी

परम पवित्र रेवा तट की भृगुभूमि पर बसा यह जाबालिपुर आज तक अनेक उद्भट विद्वानों, साहित्यकारों, मनीषियों, कवियों को जन्म दे चुका है, अत: इसी कड़ी में श्रीमती सुभद्रा कुमारी चौहान और उसके बाद श्रीमती रत्न कुमारी जी का नाम आता है। वे अपने यशस्वी पिता की यशस्वी पुत्री सिद्ध हुई।

प्रदेश के वैभवपूर्ण सुप्रसिद्ध घराने में राजा गोकुलदास की प्रपौत्री और मूर्धन्य साहित्यकार सेठ गोविन्ददास की पुत्री के रूप में सन् 1912 में 12 दिसम्बर को आपका जन्म हुआ। गणित के विद्यार्थी के लिये यह अंक अवश्य शोध का विषय है।

वैभवपूर्ण वातावरण में आपका लालन-पालन हुआ था। आपकी शिक्षा-दीक्षा महल में ही संस्कृत के माध्यम से प्रसिद्ध व्याकरणाचार्य पं. सुन्दरलाल प्राणाचार्य की देख-रेख में हुई, वे काव्यतीर्थ हैं। इस कारण भी आपकी रुचि बचपन से ही साहित्य की ओर बढ़ी, परिणामत: सन् 1934 में आपके गीतों का संग्रह "अंकुर" नाम से प्रकाशित हुआ। दूसरी पुस्तक ऋतु पर्व है। इसके अतिरिक्त सेठ गोविन्ददास जी ने जितने नाटकों का सृजन किया, उनके सभी गीत आपने लिखे हैं। कुछ फुटकर गीतों, स्तुतियों तथा एक खंड काव्य का प्रकाशन होना है। आपकी स्वाभाविक रुचि संस्कृत साहित्य की ओर ज्यादा है, अत: जो भी साथी आपके बने वे संस्कृत निष्ठ ही हैं।

यह सत्य है कि आप वैभव पूर्ण वातावरण में पली-पुसी और बड़ी हुई किन्तु, आपके पारिवारिक परिवेश में उसकी झलक तो दिखाई देती है, उसे ओढ़ने में आपने सदैव संकोच का अनुभव किया है। आपकी मनोदशा सदैव उस खुले वातावरण की टोह में रहती थी, जहां सब मिल जुलकर क्रियाशील रहते हैं। आपके मन में ऊंच-नीच की सीढ़ियां कभी नहीं निर्मित हुई। सबकी सुनना, सबके दुख-दर्द में सहभागी बनना उनका अपना निजित्व है।

इसी कारण आपका पूरा व्यक्तित्व समाज सेवा से ओतप्रोत रहा। स्वाधीनता की लड़ाई में अपने पिता के जेल जीवन में आप उनकी अदृश्य शक्ति के रूप में सामने आई। हर क्षण उन्हें संबल प्रदान करने में क्या-क्या नहीं झेला।

आप अपने वैभवपूर्ण ससुराल का सुख त्यागकर अपने यशस्वी पति कुँवर लक्ष्मीचंद जी के साथ जबलपुर इस कारण आ गयीं कि भारत माता की बेड़ियों को काटने में जो लाल शहीद हो रहे थे उनके परिवार जनों को सहारा देना है, उनका सम्बल बढ़ाना है। आपने अपने यशस्वी जीवन में अनेक प्रतिभाओं को उभारा और उन्हें जीवन संग्राम में आगे बढ़ने का हौसला सिखाया। आप इस नगर की माटी की ऐसी दीप बनी, जिससे पूरा नगर आलोकित हुआ। मानवता के व्यापक हित संवर्धन की दिशा में, विभिन्न क्षेत्रों की गतिविधियों में, पंथों तथा भूमियों पर आपके संघर्ष और त्यागपूर्ण जीवन की रेखायें स्पष्ट परिलक्षित होती हैं, धर्म धारणा और आध्यात्मिक आस्था की तो आप प्रतिमूर्ति हैं।

जिस समय आपके पिता सेठ गोविन्ददास जी जेल गये उस समय परिवार में कोई ऐसा सदस्य नहीं था, जो स्टेट की देखभाल करता। आपके पितामह राय बहादुर जीवन दास जी वृद्ध हो चुके थे। भाई बाबू मनमोहनदास जी, बाबू जगमोहनदास जी और बहिन पद्मा जी की अवस्था बहुत कम थी। वे सभी भाई-बहिन स्कूल-कालेजों में शिक्षा ग्रहण कर रहे थे। अत: पूरा भार आप पर आना स्वाभाविक था। इसी बीच पिता जी का पूरी सम्पत्ति से त्यागपत्र दे देना और राजा गोकुलदास महल को छोड़कर अन्यत्र किराये के मकान में चले जाने पर आप भीषण विपत्ति से घिर गईं। फिर भी इन सब आपत्तियों का आपने बड़ी बहादुरी से सामना किया और जो नाव बीच मझधार में फंस गई थी, उसे क्रमश: उबारने में अपनी ताकत भर जुटी रहीं। देश की स्वाधीनता के साथ ही आपको भी राहत मिली। पिता जी जेल से बाहर आये और धीरे-धीरे बादलों की घटायें घटनी शुरू हो गईं।

एक राष्ट्रवादी सुसंस्कृत पिता की पुत्री होने के नाते उनमें राष्ट्रीयता का समावेश उनके जीवन में सहज हो उठा था और बाल्यकाल से ही जन सेवा की लालसा ने उन्हें आकर्षित किया। यदि यह कहा जाय कि जिस तरह पं. नेहरू ने अपनी बेटी इन्दिरा जी को देश सेवा के लिये तैयार किया था, उसी तरह सेठ गोविन्द दास जी ने रत्नकुमारी जी को तैयार किया, यह कहें तो अतिश्योक्ति नहीं होगी। राजपरिवार में पालित-पोषित होने और उच्च पदों पर प्रतिष्ठित होने के बाद भी उनमें जो सरलता, सहजता और ममता के दर्शन होते हैं, उससे सहज ही सामने वाला नतमस्तक हो उठता है।

आज वे राजा गोकुलदास महल की सबसे बड़ी बुजुर्ग हैं। अत: परिवार जनों के बीच उनकी अनुभवपूर्ण राय सबको संबल प्रदान करती है। पारिवारिक कार्यों में, राजनीति में तथा समाज सेवा ... के अनुभव अपना एक

अलग अस्तित्व रखते हैं। जीजीबाई या बुआ जी के नाम से आप अधिक चर्चित हैं। यह संबोधन अब सबका निज का बन गया है। बड़े-बड़े बुजुर्ग भी आकर उन्हें जीजीबाई से संबोधित करते थे। यह आदर और अपनत्व भरा स्नेह उन्हें सचमुच में शक्ति प्रदान करता है। आज भी 83 वर्ष की अवस्था हो जाने के बाद भी उनमें युवकोचित गतिशीलता है। आलस्य तो मैंने उनमें कभी नहीं देखा और जो काम सामने आये उसी क्षण निपटाने में उनकी तत्परता सराहनीय और अनुकरणीय होती है।

महात्मा गांधी हरिजन आन्दोलन के सिलसिले में 3 दिसम्बर सन् 1933 में जबलपुर पधारे थे। श्रीमती रत्नकुमारी जी के पिता जेल में थे, अत: गांधी जी साठिया कुआं स्थित व्योहार राजेन्द्र सिंह जी की कोठी में ठहरे थे। उन्होंने आपकी माता श्रीमती गोदावरी देवी को अपने पास बुलाया। आप भी साथ थीं। इस समय तक मारवाड़ी समाज में गहने तथा आभूषण पहनने का बड़ा रिवाज था, गांधी जी ने रत्नकुमारी जी से कहा 'इस समय नारियों को आभूषण पहनना शोभा नहीं देता', अत: उन्होंने उसी दिन से सारे आभूषण पहनना बंद कर दिये और सादगी से रहना प्रारंभ कर दिया। आज भी वे शुद्ध खादी की धोती और खादी के ही परिधान धारण करती है। उनके जीवन में गांधी मूर्तवत हो उठा। उनके पति कुँवर लक्ष्मीचन्द जी के जीवन में सादगी का संचार इन्हीं की देन थी।

श्रीमती रत्नकुमारी जी की समाज सेवा, सादगी पूर्ण जीवन से प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी अत्यन्त प्रभावित रही। उनके किसी प्रकार आग्रह न करने पर भी इन्दिरा जी ने सन् 1976 में राज्य सभा की टिकिट दी और तब से सन् 1994 अप्रैल तक बराबर सदस्य बनी रहीं। इन्दिरा जी उन्हें कांग्रेस संगठन में पद देना चाहती थी, किन्तु उन्होंने इसे भी विनम्रता पूर्वक अस्वीकार कर दिया। एक बार उन्हें जबलपुर संसदीय क्षेत्र से भी लोक सभा की टिकिट दी गई, किन्तु वे इसमें सफल नहीं हो सकीं। परिणामत: उन्होंने राज्यसभा से ज्यागपत्र दे दिया, किन्तु इन्दिरा जी ने उसे मंजूर नहीं किया। आज ऐसी त्याग-तपस्या की बात करते आश्चर्य होता है। लेकिन श्रीमती रत्नकुमारी जी हम सबके समक्ष एक ज्वलन्त प्रमाण है। श्रीमती रत्नकुमारी जी का सादगी पूर्ण जीवन हम सबको उस ओर बढ़ने का साहस प्रदान करता है।

सामाजिक कार्यों में आपकी रुचि स्वाभाविक है, अत: वर्तमान में आप म.प्र. की प्राचीन शिक्षण संस्था हितकारिणी सभा की सभापति, सामाजिक और शैक्षणिक संस्था समाधान की अध्यक्ष, श्री ठाकुर विहारी जी महाराज कुचैनी मंदिर ट्रस्ट की प्रबंध संचालिका, शहीदों की यादगार में निर्मित महाकौशल शहीद स्मारक भवन ट्रस्ट और भारती संगम, दिल्ली की प्रन्यासी, सांस्कृतिक तथा सामाजिक संस्था गुंजन कला सदन मध्यप्रदेश की संरक्षिका, श्री गोपाल लाल जी महाराज मंदिर ट्रस्ट की प्रन्यासी, सेठ गोविन्द दास ट्रस्ट की प्रबंध प्रन्यासी एवं नगर की अन्य अनेक साहित्यिक, सांस्कृतिक, शैक्षणिक और राजनैतिक संस्थाओं की आप संरक्षिका के पद पर पदासीन है।

सेठ गोविन्ददास जी ने सन् 1947 में दैनिक जयहिन्द पत्र का प्रकाशन प्रारंभ किया तब उनके मैनेजिंग डायरेक्टर बाबू जगमोहन दास जी बनाये गये, अत: पत्र की गतिविधियों के संचालन में आपका मार्गदर्शन अप्रत्यक्ष रूप से निरंतर बना रहा। इसके उपरांत सन् 1952 में जब आम चुनाव हुए तब से सन् 1974 तक आपने जबलपुर संसदीय क्षेत्र में जिला कांग्रेस कमेटी के माध्यम से समूचे जिले में संगठन को गति शीलता प्रदान करने में सक्रिय भूमिका निभाई है।

आपके पिता सेठ गोविन्ददास जी सन् 1923 से ही लोकसभा के सदस्य निर्वाचित होते आये हैं। अत: नये संविधान के अनुसार सन् 1952 में पहला आम चुनाव सम्पन्न हुआ जिसमें सेठजी के साथ आपके अनुज जगमोहनदास भी पुराने म.प्र. विधानसभा के सदस्य निर्वाचित हुये और इसके बाद राजा गोकुल दास महल चुनाव का सबसे बड़ा केन्द्र सेठ जी के जीवन पर्यन्त बना रहा। चाहे वह लोकसभा या विधानसभा का चुनाव हो या नगर पालिका, नगर निगम का या कि कांग्रेस संगठन का चुनाव हो पूरे जिले की गतिविधियों का केन्द्र राजा गोकुलदास महल रहा, जिसकी पूरी देखभाल श्रीमती रत्नकुमारी जी करती थीं। सेठजी के साथ-साथ बाबू जगमोहन दास और उनके निधन के बाद बाबू मनमोहन दास विधानसभा में चुने गये। बाबू मनमोहन दास का निधन 4 फरवरी 1975 को हो गया, अत: कुछ अन्तराल के बाद उनके पुत्र बाबू चन्द्रमोहन जी सन् 1980 में उसी क्षेत्र से विधायक निर्वाचित हुए। उन्होंने सन् 1992 दिसम्बर तक इस क्षेत्र का प्रतिनिधित्व किया।

श्रीमती रत्नकुमारी जी की बड़ी भाभी श्रीमती शांता जी तो दिन में जब तक एक बार उन्हें देख न लें चैन नहीं पड़ती है और यही हाल आपका भी है। घर में छोटे-बड़े उन्हें सभी सम्मान देते हैं। आपको परिवार का पूरा सुख प्राप्त है। आपके सुपुत्र बाबू गिरीश, बहू श्रीमती रजनी, भतीजे बाबू चन्द्रमोहन तथा भतीजा बहू श्रीमती गोपाली आपकी सेवा में सदैव तत्पर रहती हैं, जो कि यह सौभाग्य बहुत कम परिवारों में देखने-सुनने को मिलता है। ❑ ❑

संस्मरण

हमारे परिवार के सम्बन्ध मेरे दादाजी के समय से सेठ जीवनदास जी से रहे हैं, परन्तु मेरा व्यक्तिगत सम्बन्ध इस परिवार से बाबू जगमोहन दास जी के कारण हुआ। उसी समय से मैं इस परिवार का एक सदस्य हो गया। अतः श्रीमती रत्नकुमारी जी मेरी भी जीजी हैं। उनके साथ पिछले 40 वर्षों से रहते हुए कई संस्मरण लिखने लायक एवं बताने लायक हैं, परन्तु उनमें से एक ही मैं यहां दे पाऊंगा। संस्मरण इस प्रकार है :-

जब मैं नगर कांग्रेस कमेटी का अध्यक्ष था, तब नगर में आये हुए तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री शुक्ल जी हमारे यहां पधारे हुए थे। उनकी एक सभा मोतीनाला वार्ड में आयोजित की गयी थी, जिसमें जीजी बाई भी गयी हुई थीं। उसी समय कम्यूनिष्टों की एक रैली सभा द्वार से निकली, जिन्हें रत्नकुमारी देवी ने बहुत फटकारा। उसी समय पुलिस ने लाठी चार्ज किया एवं कम्यूनिष्टों को पकड़ लिया। पूरे समय वे अपने स्थान पर खड़ी रहीं एवं जब पुलिस इंस्पेक्टर निलंबित किया गया तो उसका निलंबन समाप्त करवाने के लिए मेरा पूरा साथ दिया। निलंबन समाप्ति के साथ-साथ उस पुलिस आफीसर को उसी थाने में पुनः पदस्थ करवाया।

ऐसी नेत्री को ईश्वर शतायु करें जिससे उसका नेतृत्व हमें सदैव मिलता रहे।

प्रभुलाल करेचा
जबलपुर
30-11-95

शत् शरद जीवित रहो ममतापयी

राजमहल के उतुंग शिखरों से उतरती पीयूष धारा,
रजतरश्मियों के बीच क्रीड़ा करता बचपन
सुख समृद्धि के सुरभित आँगन में
महकती एक कोमलांगी कलिका
सर्वस्वत्यागी पिता के श्री चरणों का अनुगमन कर
तुम राष्ट्र की सेवा में तत्पर हुई।
काव्य की कुंजगलियों में विचरण कर
सौन्दर्य और प्रेम की अनुभूति
अभिव्यक्ति का श्रृंगार बन गई
वैभव और वैष्णवी वृत्तियों में
अद्भुत समन्वय का सुन्दर सोपान बन गई
ममता और वात्सल्य की निरूपम निर्झरणी
दुखियों की दारूण पीड़ा लख
करूणा के उद्गार बन गई,
राजनीति की कुटिल बीथियों में
स्वच्छ निर्मल छबि की अधिकारिणी है
सेवा और संकल्प की प्रतिमूर्ति
जनगण कल्याण की अनुहारिणी हैं।
रत्नों जैसा ही सुशोभित नाम है
शील-संयम-विनय की साकार प्रतिमा
धर्म का सम्मान, प्रभु का धाम है।
लाड़ले गोपाल लाला की सतत आराधना,
जन जनाहृन की जगाओ चेतना
शत-शरद जीवित रहो ममतामयी,
दो हमें आशीष सेवारत रहें
दो निरन्तर प्रेरणा हम राष्ट्रहित
कर सके सर्वस्व अर्पण विनत हो
रोग और संताप तुमसे दूर हो
शांति और संतोष नित भरपूर हो।

मनोरमा तिवारी
प्राचार्या
बिदामबाई उ.मा. शाला

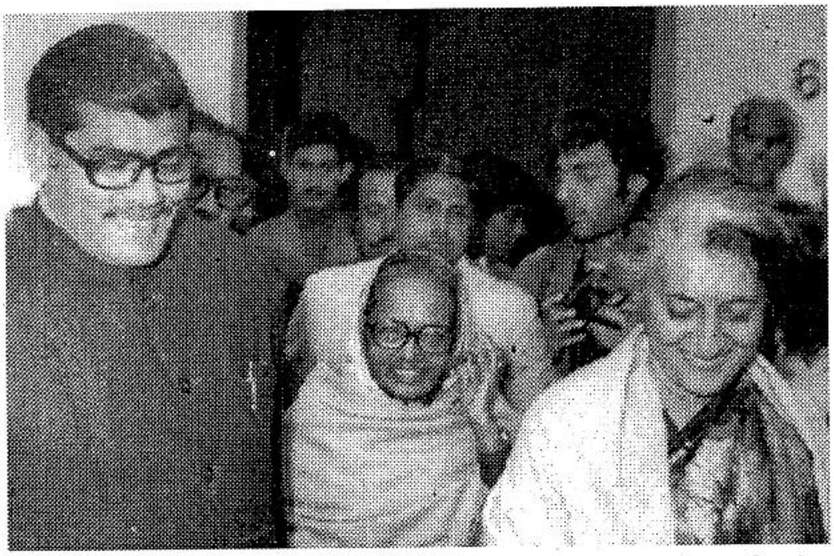

सांसद श्रीमती के निवास पर प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी प्रसन्न मुद्रा में पास ही खड़े हैं श्री रामेन्द्र तिवारी।

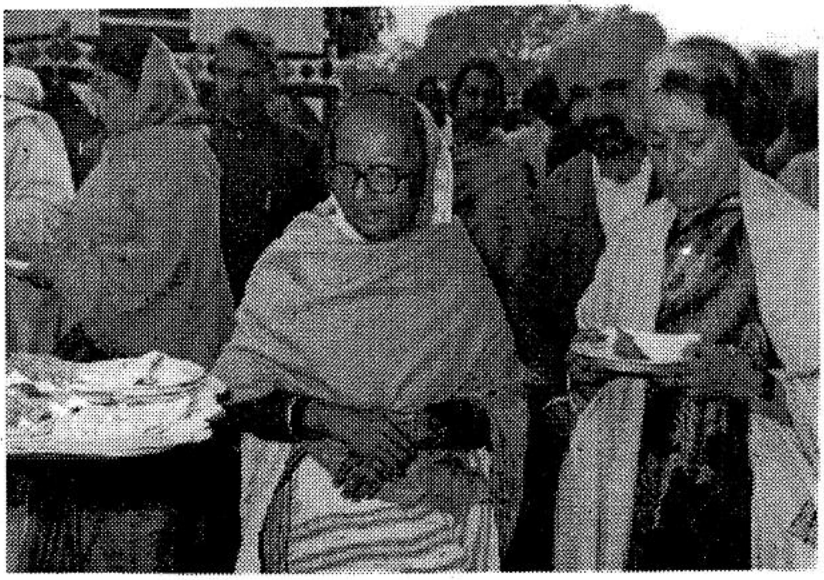

रत्नकुमारी देवी : संसदीय जीवन के अठारह वर्ष

प्रो. यू.डी. मिश्र

राष्ट्र के हिन्दी जगत के पितामह, गौरक्षा के प्रणेता, महान नाटककार एवं साहित्यकार सेठ गोविन्ददास की ज्येष्ठपुत्री माननीया श्रीमती रत्नकुमारी देवी के अमृत महोत्सव के पुण्य अवसर पर आज हम सब उन्हें शतायु होने की कामना के साथ उनका अभिनन्दन कर रहे हैं।

"होनहार बिरवान के होत चीकने पात" कहावत श्रीमती रत्न कुमारी देवी के लिए चरितार्थ है। उन्होंने अपना अभी तक का संपूर्ण जीवन पूज्य कक्का सा. के पद चिन्ह पर ही व्यतीत किया है। जिस प्रकार पंडित जवाहर लाल नेहरू ने श्रीमती इन्दिरा गांधी को एक महान नेत्री के रूप में पल्लवित किया, उसी तरह सेठ गोविन्ददास जी ने श्रीमती रत्नकुमारी देवी को बचपन से ही समाज सेवा, राष्ट्र सेवा एवं साहित्य सेवा के बीज उनके जीवन में बो दिये जो निरंतर विकसित होते रहे।

स्वभाव सरल, मिलन सारिता में सहज, वाणी से मृदुभाषी, देखने में एकदम सज्जनता की प्रतिमूर्ति, परामर्श एवं मार्गदर्शन में प्रगतिशीलता जैसी अनूठी झलक उनके जीवन में प्रतिबिम्बित होती है। श्रीमती रत्नकुमारी देवी का संसदीय जीवन दर्शन भी अनूठा रहा है।

श्रीमती रत्नकुमारी जी जिन्हें हम लोग आदर से बुआजी कहते हैं बचपन से ही अपने पिता सेठ गोविन्ददास जी के राजनैतिक क्षेत्र की अनुयायी हो गई थी। पिताजी के निधन के उपरांत सन् 1974 में प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा जी ने जबलपुर लोकसभा सीट से कांग्रेस का प्रत्याशी बनाना चाहती थी, किन्तु आपने इसे अस्वीकार कर दिया था, परिणामत: सन् 1976 में पुन: श्रीमती इन्दिरा जी ने राज्यसभा की टिकिट आपके नाम घोषित कर दी, इस खबर को सुनकर वे यह कहकर सो गयी कि वह रत्नकुमारी पिपरिया वाली हैं जो विधानसभा की सदस्य रह चुकी हैं। किन्तु होनी तो होकर रहती है, सुबह जब आपके नाम की खबर छपी तब उन्हें हर हालत में विश्वास करना पड़ा।

उन्हें दो बार इन्दिरा जी ने और एक बार राजीव जी ने राज्यसभा में कांग्रेस प्रत्याशी घोषित किया। प्रदेश कांग्रेस (इ) के अध्यक्ष सांसद श्री मुन्दर शर्मा के निधन के उपरांत इन्दिरा जी ने उन्हें जबलपुर संसदीय क्षेत्र से प्रत्याशी घोषित किया था। आप सन् 1976 से 1994 अप्रैल तक राज्यसभा की सदस्य रहीं। इस बीच शासन की विभिन्न समितियों में रहकर राष्ट्र के उत्थान में अपनी सक्रियता की छाप छोड़ी। चूंकि आप जबलपुर की थी, इसलिये नगर के उत्थान में आपकी दिलचस्पी होना स्वाभाविक ही था। अत: जबलपुर में दूरदर्शन केन्द्र की स्थापना, डुमना हवाई अड्डे का विस्तार तथा जबलपुर को हवाई यात्रा से जोड़ना तथा जिले में तेल शोधक कारखाने की स्थापना आदि मुद्दों पर सरकार का ध्यान आकर्षित करती रहीं। वे नगर की प्रदूषण समस्या के निवारणार्थ पर्यावरण के विकास एवं नर्मदा जल योजना एवं भूमिगत नालियों की योजना के लिये राज्य शासन से भी लगातार अनुरोध करती रही। तेल शोधक कारखाने की स्थापना के लिये तो आपने प्रधानमंत्री के सामने धरना देने के लिये भी उद्दत हो उठी थी। आप में यह पैतृक गुण है कि वे जिस बात का संकल्प कर लेती फिर उससे लौटना उनके वश में नहीं रहता।

श्रीमती रत्नकुमारी देवी लगातार अठारह वर्ष तक राज्यसभा की सदस्य रही, जो नगर ही नहीं बल्कि पूरे प्रदेश के लिये सौभाग्य का विषय था। दिल्ली स्थित 57 साऊथ एवन्यू नगर वासियों के आवास हेतु सदा खुला रहता था। नगर का जो भी व्यक्ति जब भी उनके निवास पर पहुंचता था, उन्हें वे बड़ी भावुकता एवं ममतामयी आत्मीय भाव से ठहराती थी, चाहे वह बड़ा हो या छोटा। यह विशेषता इने-गिने लोगों में रहती है।

जिस प्रकार सेठ गोविन्ददास जी ने संसद में अर्धशती जीवन व्यतीत कर संस्कारधानी का नाम उज्जवल किया था उसी प्रकार श्रीमती रत्नकुमारी देवी ने 18 वर्ष (प्रदेश के किसी भी सदस्य से सबसे अधिक की अवधि) तक नगर का प्रतिनिधित्व किया। श्रीमती रत्नकुमारी देवी राज्यसभा के सदस्यता हेतु कभी भी प्रयत्न नहीं किया किन्तु श्रीमती इन्दिरा गांधी एवं श्री राजीव गांधी ने उनकी सेवाओं एवं संस्था के प्रति उनकी कर्मठता एवं ईमानदारी के फलस्वरूप अपनी-अपनी कार्याविधि में उन्हें राज्यसभा की सदस्यता हेतु योग्य समझा। श्रीमती रत्नकुमारी देवी यदि चौथी बार राज्यसभा की सदस्यता हेतु प्रयत्न करती तो निश्चय ही उन्हें पुन: यह अवसर मिलता किन्तु उन्होंने अपने स्वभाव के अनुरूप पूर्व परम्परा का निर्वाह किया एवं इस पद की दौड़ से अलग हो गयी।

हम आज उनके "अमृत महोत्सव" के इस महान आयोजन पर उन्हें शत् शत् नमन करते हुए उनके शतायु होने की कामना करते हैं। ❑❑

श्रीमती रत्नकुमारी जी के निवास पर श्रीमती इन्दिरा गांधी

गमेन्द्र तिवारी

एक विशेष कार्य से मैं दिल्ली पहुंचा और जैसा कि ठहरने का स्थान निश्चित रहता था उसी तरह में 57 साउथ ऐवेन्यू में श्रीमती रत्नकुमारी जी के निवास में रुका। उसी समय कुछ ही दिन पूर्व श्रीमती इन्दिरा गांधी पुनः सत्ता में आई थीं और प्रधानमंत्री का पदभार ग्रहण किया था। उस समय जबलपुर के श्री के.के. शुक्ला और भाई श्री स्वदेश जैन भी दिल्ली में मौजूद थे। रात्रि में अपने-अपने काम से मुक्त होकर जीजीबाई के पास चर्चा हेतु बैठे तो मैंने उनसे निवेदन किया कि जीजीबाई यदि सम्भव हो तो आप श्रीमती गांधी को चाय के लिये बुलायें। जीजीबाई ने तत्काल कहा कि वे व्यक्तिगत आमंत्रण स्वीकार नहीं कर रही हैं। मैंने फिर उनसे कहा कि निवेदन करने में क्या हर्ज है। जीजीबाई ने कहा कि जो बात मालूम है उसके लिये निवेदन करें और बात कट जाय तो क्या फायदा है। मैंने इस बात पर जोर दिया कि नहीं आप कल आमंत्रित करें देखिये वे क्या कहती हैं। प्रातःकाल जब उठा तो मैंने फिर उस बात को याद दिलाया। ज़ीजीबाई बोली अभी चलती हूँ। कुछ समय पश्चात हम लोग श्रीमती गांधी के निवास पर पहुंचे और श्रीमती रत्नकुमारी जी ने उनसे निवेदन कर घर पर चाय के लिये आमंत्रित किया। वे सहज भाव से एकदम बोल पड़ी कि हाँ मैं जरूर आऊंगी चाय के लिए ही क्यों भोजन करूंगी। यह कहकर हम लोग वापिस आ गए। उन्होंने कहा कि आपको घर पर सूचना मिल जायेगी कि मैं कब आऊंगी।

रास्ते में जीजीबाई बड़ी चिंतित थीं कि कैसे इंतजाम होगा। हम लोगों ने कहा भी कि आप तो दिल्ली में हैं यहां पर इंतजाम आनन-फानन होता है। चिंता की कोई बात नहीं है। हम लोग सब संभाल लेंगे। संध्या का समय था करीब 4.30 बजे अनायास फोन की घंटी बजी। भाई सुरेन्द्र मोहन जी ने फोन उठाया। मालूम हुआ प्रधानमंत्री आफिस से फोन है। जीजीबाई से उन्होंने कहा मैं प्रधानमंत्री के कार्यालय से बोल रहा हूँ कल संध्या 4 बजे श्रीमती गांधी (प्रधानमंत्री) आपके निवास पर चाय के लिये पधार रही हैं। यह सुनकर जीजीबाई अत्यंत प्रसन्न हो गईं किन्तु दूसरी ओर चिंता से भी ग्रसित होने लगीं कि इतनी जल्दी कैसे किसी को सूचना देंगे और कैसे किसी को बुला पायेंगे। मैंने कह कि जीजीबाई यहां सभी लोग जो ठहरे हैं वे सभी अभी से काम में लग जाते हैं ... एक जगह बैठ जायें ... लोग ... ... थोड़ी ही देर में हम लोग लिस्ट बनाने को स्वयं बैठ गए।

जीजीबाई से पूछा कि किस-किस को आमंत्रित करना है तो उन्होंने कहा म.प्र. के सभी सांसदों व मंत्रियों को। जीजीबाई ने कहा सूचना कैसे जायेगी कार्ड तो अभी छप नहीं सकते। मैंने तत्काल सुझाव दिया कि जीजीबाई आप अपने लेटर पेड पर पत्र लिखें। हम लोग उसकी कापी करते जाते हैं आप हस्ताक्षर कर दें और हम लोग अभी म.प्र. भवन में तथा उनके बंगले जाकर सभी को आमंत्रित कर देते हैं। हम सभी ने लगभग 12 बजे रात तक सारे आमंत्रण बांटे और सुबह उठकर बाहर वाले लान में पार्टी की व्यवस्था को मूर्त रूप देने में लग गए। लोगों ने अपना-अपना काम बांट लिया और उसकी व्यवस्था में सभी लोग लग गए। 12 बजे हमारी सारी व्यवस्था हो गई थी। टेबिल कुर्सी भी जम गई, समान भी सारा आ गया था। 4 बजे लोगों का आना शुरू हो गया। सभी लोग व्यवस्था देखकर मन ही मन प्रसन्न हो रहे थे कि जीजीबाई ने इतने कम समय में कितनी सुन्दर व्यवस्था की है। 4.30 बजे शायरन की आवाज आइ देखा कि श्रीमती गांधी की गाड़ी चली आ रही है। गाड़ी द्वार पर रुकी श्रीमती रत्नकुमारी जी ने उनका अभिवादन किया। लान में पहुंचकर उन्होंने आसन ग्रहण किया और रत्नकुमारी जी से चर्चा करने लगीं। वे सभी उपस्थित मंत्रियों एवं सांसदों से चर्चा कर कुशल क्षेम पूंछने लगी। तभी मैंने जीजीबाई से निवेदन किया कि आप पार्टी के लिये आमंत्रित करें। जीजीबाई ने जाकर सभी से निवेदन किया।

श्रीमती गांधी टेबिल के करीब आई तो उनके साथ जो सुरक्षा कर्मी थ उन्होंने कहा कि मेडम ये लीजिये। श्रीमती गांधी ने तत्काल कहा कि तुम लोग रुक जाओ अपनी पसंद की ही चीज लूंगी। सभी अतिथि पार्टी का आनन्द ले रहे थे। हम लोग भी व्यवस्था में व्यस्त थे। पार्टी खत्म हुई। रात्रि में जब सभी बैठे तो जीजीबाई ने हम सभी की भूरि-भूरि प्रशंसा की और कहा कि इतना सुन्दर इंतज़ाम किया कि सारे लोगों को बहुत पसंद आया। हम लोगों को भी मन ही मन यह प्रसन्नता हो रही थी कि श्रीमती गांधी के नजदीक इतने लम्बे समय तक रहने देखने सुनने और समझने का सुअवसर मिला, उसके लिये जीजीबाई बधाई की पात्र हैं। हम सभी के जीवन के वे क्षण यादगार बन गए हैं। धन्य हैं श्रीमती रत्नकुमारी जी जिन्होंने इस अवसर का लाभ हम सभी को दिया। जीजीबाई दीर्घायु हों यही हमारी मंगल कामना है। ❑ ❑

वात्सल्यमयी संरक्षिका जीजी बाई

साधना उपाध्याय

श्रीमती रत्नकुमारी देवी और हम सबकी जीजी बाई के राजनैतिक साहित्यिक और शिक्षण समिति के पदाधिकारी के रूप में तो हमने कई रूप अपने जीवन के प्रारम्भिक काल से देखे, किन्तु जिस मातृवत वात्सल्य मय हृदय के दर्शन पिछले दिनों हुए वह अद्भुत हैं।

हुआ यों कि जब हम लोगों ने महिला समिति त्रिवेणी परिषद् का गठन किया तब जीजी बाई से भी संरक्षक बनने का अनुरोध किया। वे सहर्ष तैयार हो गई किन्तु कुछ संकोच और कुछ इस भय से कि वे कहीं इंकार न कर दें हम लोगों ने कोई आर्थिक बात नहीं की। कई आयोजन हुए जीजी बाई बराबर आती रहीं हम लोगों के लिए उनका उपस्थित हो जाना ही सबसे बड़ा संबल था। एक बार हम लोग आमंत्रित करने गये तो वे स्वयं बोलीं कि आप लोग मेरा इतना सम्मान करते हैं परन्तु मैंने तो त्रिवेणी परिषद की कोई सेवा नहीं की है। आर्थिक कष्टों में आयोजन करने वाले हम लोग बिन मांगे मोती मिले वाली स्थिति से अत्यंत आनंदित हुए और निवेदन किया कि लक्ष्मी दुर्गा बलिदान सप्ताह की प्रतियोगिताओं में आर्थिक संरक्षण प्रदान करें।

बलिदान सप्ताह उद्घाटन के दिन जीजी बाई ने कुछ राशि की घोषणा भी की लेकिन हम लोग प्रतियोगिताओं में इतने व्यस्त हो गये कि राशि लेने नहीं जा पाये जबकि समापन के दिन नगद राशि विजेताओं को प्रदान करनी थी। हम लोग भूल गये परन्तु जीजी बाई को चिन्ता थी। समापन के एकदिन पूर्व तीन बार हमारे पास अन्य लोगों के माध्यम से संदेश भेजा और शाम होते-होते बखरी से एक व्यक्ति के हाथ से चेक हमारे घर पर भेज दिया। संदेश वाहक ने यह कहते हुए हमें चेक दिया कि कल पुरस्कार बंटना है इसलिये चेक दिया है। हम अवाक् रह गये किन्तु दूसरे ही क्षण हमें समझ में आ गया कि वे हमारी मात्र संरक्षिका नहीं हैं मातृवत हैं तभी तो उन्हें संस्था के कार्यक्रम की चिन्ता थी। बेटियाँ कहीं संकट में न पड़ जायें इसका ध्यान अपने व्यस्ततम जीवन में याद रखने की अपनी संवेदन शीलता से आज वे हम सबके मानस पटल पर वात्सलमयी संरक्षिका के पद पर आसीन हैं।

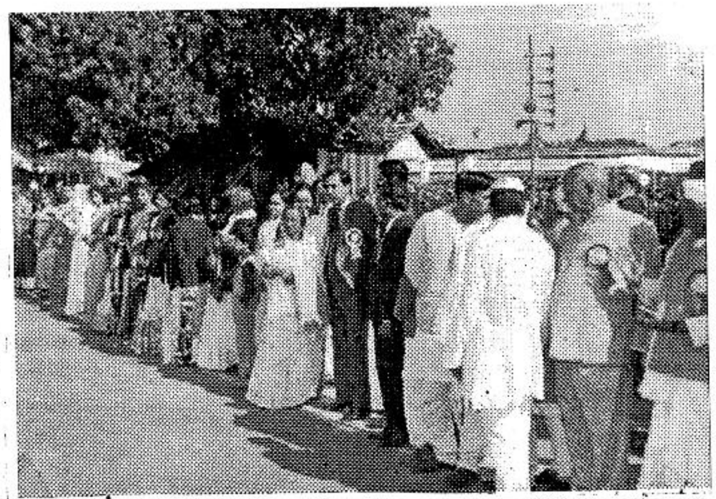

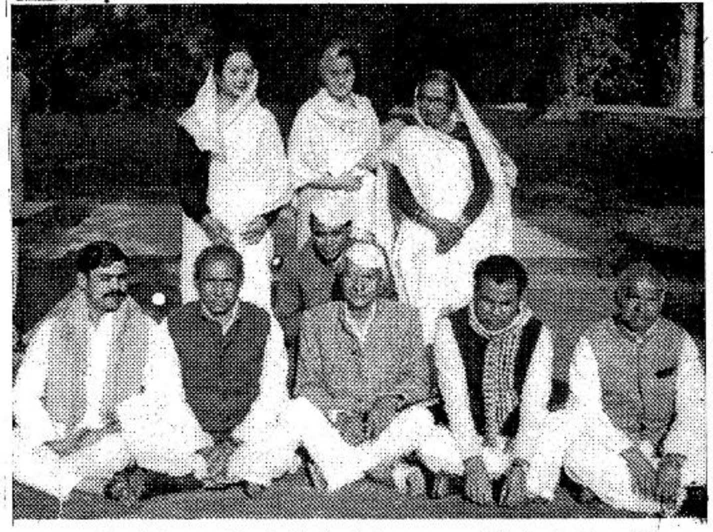

इंटुक नेताओं के साथ विधायिका श्रीमती मंजुराय प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गाँधी और श्रीमती रत्नकुमारी।

नव विकास

तरुण, अरुण, पद–पद्म विकम्पित
मलय–समर्पण डोली।
वासन्ती, माधवतन मधु–मन
आयी मृदु ऋतु भोली
किसलय के कोमल अंगों पर,
बिखरी सौरभ झोली।
गूंजी, निभृत हदय की वीथी,
सुन पिक पंचम बोली।
अरविन्दों के, मधु मंदिर में
अलि दल लूट मचायें।
परिमल लोचन, पट झट ढांकें
मन का धन छिप जाये।
कुमकुम पंक, लिये हाथों में
प्रिय अन्तर में आये।
पुलक स्वेद से सारी भीगे,
मुख पर लाली छाये।
मानस–रस से, भर पिचकारी,
प्रिय छिड़के नयनों में,
आद्र कपोल हृदय, हो जावें
मधु बिखरे सुमनों में।
नव विकास, उन्मीलित, प्रतिफल
अम्बर, अवनि तनों में।
मंदिरपावन अन्चल, में खग–मृग
चन्चल मुग्ध वनों में।

दोपहरी

उतरी धीरे से दोपहरी,
नीम तले, आंगन में सोची चौंक उठी वह छाया गहरी।

मन के, किस कोने की, खिड़की
खुली, उदासी के आलम में ?
देखा तुम्हें कि केवल यह था,
तब प्रतिबिम्ब, छिपा मानस में ?

विदा लोक से हटे अचानक अन्धकार रक्षारत, प्रहरी।

सह न सकी, तब प्रखर प्रभा को,
ये आँखें, आंसू से गीली,
समृति–विस्मृति की, झिलमिल में ही
झपक खुली, जब दृष्टि लजीली

कण कण में, फिर तुम्हें खोजता, उसी उदास धूप में ठहरी

कितनी रहीं अवनिका बाकी ?
जिनके पीछे आना जाना ?
लुका छिपी का खेल दौड़कर
भेजोगे तुम कब परवाना ?

बिखरेगी कब किस झञ्झा से, स्वप्नघटा जो घिरघिर गहरी।

जीत भी हार

खोजता था क्या न ये क्षण ?

पूर्णता लेकर उदित हों, आत्म विस्मृति, एक चिंतन।
क्यों विफल सा हो, विकल अब, रूठता तू रे। चपल मन ?

कल्पना की तूलिका का, देखता है, मधुर अंकन।
क्यों लगाता होड़ इनसे, ये अकिंचन श्रान्त लोचन।

ढल पड़ी दो चार बूंदें, लुट गया, यदि मान का धन।
जीत भी फिर हार तेरी, सफल हो या विफल अर्पण।

विश्वास

स्वांत रे, विभ्रान्त मत हो पी अमृत विश्वास।
देख जग में, झांक कर तू,
मौन निज में आंक कर तू
विश्वपट में प्रस्फुटित है, एक ही आभास।
स्वार्थ की उद्भ्रान्त तड़पन,
खोजती सुख शांति के कण,
बिन्दु से, सूखे उदधि की, कब बुझी है प्यास ?
सदय सेवा के सफल क्षण,
उमड़ता उर द्रवति लोचन
सघन तम में किरण रेखा, खींचती उल्लास।
दूर उठ ऊंचे गगन में
खोल, पर विस्तृत पवन में,
जगत के निश्वास, मंजिल, आत्म स्वासोच्छास।

पतझार मास

हिम की सित, चादर उतार,
अलसाई सी उठी प्रकृति अब, आकुञ्चित निज अंग झार
गुनगुनी धूप की बहती सी,
निर्झरणी में, कर शीर्ष स्नान,
अंग वस्त्र, सूखा मारूत का,
लेकर पोंछा कच तरु वितान।
मर्मर पत्रों का, पीला सा,
अन्तर्वासक युत, उत्तरीय,
रूखे तन पर, अञ्चल लपेट,
लगती, लोचन को, लोभनीय।
सरसी के शिशु कमल वृन्त
झूमे, कानों में, कर्ण फूल।
कुन्द कली के, हारों पर,
कसके पाटल के मृदुल शूल।
पत्रहीन लतिका के वर्तुल,
नमित तन्तु कर में कण।
चरण चाप मुखरित नूपुर से,
बजते, सूखी धरती के कण।
आ रहे, दूर मधु माधवन के,
पथ दर्शक ये पतझार मास
रस विहीन के निर्वासन
या अवनी के गहरे उसाँस?

❑ ❑

प्रतीक्षा

नीलम के, आँगन में बैठी,
सुधार धार में, कर, अभिषेक।
किरण डोर में पिरो रही, निशि,
बिखरा, ग्रह नक्षत्र अनेक।

रवि, शशि ज्योति, ग्रहण में पड़कर,
खोती, उस क्षण अपना गर्व।
अपनी ज्योति, सदा झलकाते,
ग्रहण मुक्त ये ग्रह हैं खर्व।

नक्षत्रों के, रूप अनेकों,
भूतल पर, निज छाया डाल।
कर्म फलों को, प्रगटित करते,
जग में, जीव जगत के, भाल।

शिशिर विकम्पित, नलिनी जल पर,
देख, किरण मंच, निशि श्रृंगार।
उषा रश्मि की, करे प्रतीक्षा
आतुर, खोल हृदय के द्वार।

❑❑

रानी दुर्गावती के प्रति

निर्झर के स्वच्छन्द गान से तूने सीखा था गाना।
फूलों ने हंसना सिखलाया, कलियों ने मृदु मुसकाना।
तूने बन राजा से सीखा पराधीनता ठुकराना।
तुझे पतंगा ने सिखलाया विमल प्रेम पर मर जाना।
    तू सुन्दर थी, जग सुन्दर था, सुन्दर थे सब तेरे वेष।
    कभी न भूलेगा तुझको यह हाय ! अकिञ्चिन कोशल देश।

☆ ☆ ☆

ब्याह हुआ तू कोशल आयी, विन्ध्याचल भी मुसकाया।
तेरे स्वागत में ही मानों रेवा ने गाना गाया।
मदन-महल की वन-वीथी ने तुझे संदेशा भिजवाया।
आओ रानी भाग्य जगें, ये राम-राज्य फिर से आया।
    सीता बनकर तू आयी थी दलपति था तेरा अवधेश।
    कभी न भूलेगा तुझको यह हाय अकिंञ्चिन कोशल देश।

☆ ☆ ☆

महाप्रबंध विधि का विधान है निठुर काल था मुसकाया।
तेरा सुख-सुहाग रो-रो कर भाग्य चक्र पर पछताया।
सुख की मुरझ वाटिका उजड़ी दुख का अंधियारा छाया।
तेरे जीवन के आँगन में क्लेश नृत्य करने आया।
    चार वर्ष का भोला बालक अब तो था तेरा भाग्येश।
    कभी न भूलेगा तुझको यह हाय अकिंचन कोशल देश।

☆ ☆ ☆

न कलङ्क बने

रवि-रश्मि-जनित गुरू ताप तपे
दुर्गम पथ पर चल शांत हुआ
मुख म्लान शिशिर-हत-पंकज सा
तब कण्ठ तृषातुर क्लान्त हुआ।

छल-छल कर छलक रहा रस स्त्रोत
प्रतिक्षण नूतन स्वाद बहे -
यह मोहक मानस पूर्ण पड़ा
रस पान करो पर याद रहे -

तब धूल भरे पद पथिक नहीं
इस निर्मलता के अङ्क सने।
बन पंङ्क धूल इन चरणों की
इस मानस का तू कलंङ्क बने।

मेरी मणियाँ

तरल तरंङ्गों सी क्षण-क्षण नव
केलि कामनाएं करतीं,
थिरक-थिरक मेरे मानस में
अतुलित आन्दोलन भरतीं।

वीचि-वृन्द के चंचल उर से
उत्कण्ठा न ले अवतार।
चित्र-विचित्र खींच दिखलाया
मणि-मण्डित आभरण अपार।

उनसे उद्गत दीप्ति दीप्ति से
सज्जित सुन्दर मेरे अंग।
उस कल्पित आकर्षक छबि पर
मन में ऐसी उठी उमंग।

लड़ी जगत चिन्ता की टूटी
दिखता था सब कुछ निस्सार।
मुझे मिलें वे मणियां सुन्दर
इसी अर्थ सारे व्यापार।

निज जीवन श्रम जनित खेद से
खिन्न हुई मैं अति ही श्रान्त,
मुकुलित चर्म-चक्षु, उन्मीलित
मानस के लोचन अभ्रान्त।

अभ्यन्तर के उस आकर में
दिखी अचानक अति अविकार,
वह संस्कृत सी शुद्ध दीप्त जो
थी अमूल्य मणिराशि अपार।

उनसे वाह्य जगत की मणियां
लज्जित थीं पा गहरी हार।
फूली नहीं समाई मन में
मिला देख सच्चा भण्डार।

हंस कर मैंने निज जड़ता पर
हर्षित होकर खोई भ्रान्ति।
सुलझ गयी जीवन की उलझन
मेरी मिटी अपरिमित श्रान्ति

श्री सोमनाथ जी

हे सोमनाथ ! हे शिव महान !
तुम प्रधान हो प्रकृति रूप, प्रकृति परे तुम अप्रधान।

स्वयं प्रकाशित सर्व व्याप्त, कूटस्थ, नित्य, निर्लेप, सत्य,
निर्विकार तुम गुणातीत, कर कृपा, कृतार्थ करते स्वभृत्य।

तनक्षय का कारण बन प्रकटी, प्रेमास्पद पर, असम दृष्टि,
भुवन मोहनी काया पर, काले कलंक की विषम सृष्टि।

तप करते प्रभास में जपते, मृत्युंजय दश कोटि नाम,
चन्द्र कुण्ड में, स्नात, सोम, निज तन फिर पाते कान्तिमान।

भक्त, भाव में डूब सुनाता, जब, तुमको निज आर्तभाव,
त्रिविध ताप, क्षण में, हर लेता, करुणामय तव मृदु स्वभाव।

ज्ञानालोकित अन्तर्पट में, जीव, देखता निज स्वरूप।
वही, परम, विज्ञान, जगत को, देख सके जो, ब्रम्हरूप।।

भाग अनेकों तुम में कल्पित, भाग रहित तव रूप एक,
सृजन, संहरण, रक्षण, जग का, ये हैं तव क्रीड़ा अनेक।।

श्री गंगा जी

विष्णु लोक से उतरी जननी, संवृत करती वेग महान।
अवनी कांप उठी, ऊर्जस्वित देख. तरंगावली वितान।।

लीन हुई हर जटा जूट में, दया द्रवित कर .अपनी ध्यान।
शिव विराट को कर प्रसन्न जब, लाये मांग भागीरथ दान।।

अंशरूप से प्रकटी, भूपर, तप पुनीत सुन नृप आव्हान।
पृथिवी के मानव ने पाया, जल में निज जीवन अभियान।।

गगनोन्नत हिमगिरि मस्तक पर, वंकिम गतिमय बीचिविलास।
हर शिर शोभित चन्द्रकला का, निर्मल उज्जवल मानो हास।

उपल कठोर। श्रृंग गिरि पथ के, भेद चली उत्तुंग तरंग।
सदा स्वभाव सदय जननी भी, सह न सकीरंचक गतिभंग।।

प्रबल-प्रवाह, प्रताड़ित पर्वत, हिम के गिरते खण्ड विखण्ड।
शत् शत् शिला शकलमय होतीं, तृर्ण सम बहते वन तरू दंड।।

घन-प्रचण्ड उद्घोष उग्ररव, हहराता प्रवाह उद्दाम।
युग-तट-शैल विकम्पित मानों, करते लहर थपेड़े बाम।

त्रिविध-ताप-ज्वाला जगती की, चिर अतृप्ति मृगतृष्णा भ्रान्ति।
तमसावृत उत्संग मृत्यु का, पाकर पाती केवल शान्ति।।

सह न सकी जननी निज जन के, विषम कर्म के विषमय भार।
तीव्र तरंग धार से काटे, कर्म रज्जु के काले तार।।

शीतल, शान्ति, सुधा, नीर से, धोये बन्धन के व्रण दाग।
मज्जन, पान, सुनिर्मल, काया, ध्यान, धौत, अनुराग, विराग।।

तजूं भुक्ति, भज मुक्ति निरन्तर, उद्भासित कर आत्मिक ओज।
ब्रम्ह कमण्डलु, विष्णु चरण तक, पहुंचे तव पावन पथ खोज।।

श्री ठाकुर बिहारी जी महाराज कुचैनी मंदिर ट्रस्ट की स्थापना सन् 1860 में सराफा वार्ड, भालदारपुरा, जबलपुर में एक कच्चे कमरे में हुई थी, उसी समय श्री बिहारी लाल जी कुच्या की धर्मपत्नी स्व. श्रीमती सुकरानी बहू कुचैनी बाई के द्वारा कमेटी की स्थापना हुई थी। जिसमें श्री गहोई समाज के और दूसरे समाज के पंच नियुक्त किये गये थे। श्रीमती सुकरानी कुचैनी बाई ने अपनी समस्त जायदाद श्री ठाकुर बिहारी जी महाराज कुचैनी मंदिर में अर्पण कर दी थी। जिसमें फुहारे वाला मकान, जहां पर पहले श्मशान घाट था, सराफा वार्ड के तीनों मकान, गोहलपुर बगीचा, गांव जमनिया की जमीन, कोतवाली वार्ड का मकान, ट्रस्ट में लगा दी थी। इसी जायदाद के किराये से भगवान श्री ठाकुर बिहारी जी महाराज का पूजन और उत्सव होते रहे। उस वक्त रुपये दो रुपये किरायेदारों से मिलते थे। इसलिये बहुत तंगी रहती थी। इसी तरह ट्रस्ट चलता रहा। सन् 1920 में श्री नन्हेंलाल पहारिया सरवराहकार बने। नन्हेंलाल पहारिया के स्वर्गवास हो जाने के बाद स्व. श्री मोहनलाल जी पहारिया सरवराहकार बने। मोहनलाल पहारिया ने श्री द्वारका प्रसाद भार्गव को ट्रस्ट का अध्यक्ष बनाया और श्री मनोरंजन चटर्जी, श्री रामचंद जी नगरिया, श्री श्यामसुन्दर बड़ेरिया, को ट्रस्टी नियुक्त किया। इसके बाद मध्यप्रदेश ट्रस्ट एक्ट के अनुसार सन् 53-54 में ट्रस्ट का पब्लिक ट्रस्ट में रजिस्ट्रेशन कराया गया। इसके पूर्व जहां पर कुचैनी मंदिर बना है, वहां पर कच्चा मकान था। वहां पर जयपुर के कारीगरों को बुलवाकर सुन्दर मंदिर बनवाया गया। जहां पर अभी वर्तमान में भगवान श्री ठाकुर बिहारी महाराज विराजमान हैं। ट्रस्ट का काम श्री मोहनलाल पहारिया के कार्यकाल में सुचारू रूप से चल रहा था। जो आज तक विधिवत ट्रस्ट का संचालन हो रहा है। इस ट्रस्ट में बद्रीप्रसाद खरया भी ट्रस्टी थे उनके दिल्ली चले जाने पर श्री श्यामकुमार बरसैया को ट्रस्टी बनाया गया। उसके बाद श्री नारायणदास असाटी, श्री बाबूलाल पिपरसानिया, श्री वल्लभदास सरावगी, श्री नर्मदा प्रसाद नगरिया भी ट्रस्टी बनाये गये।

सन् 67-68 में अध्यक्ष द्वारका प्रसाद भार्गव के इस्तीफा देने पर श्री भार्गव जी के स्थान पर सेठ श्री बाबू मनमोहन दास जी को ट्रस्टी एवं अध्यक्ष बनाया गया। सन् 65-66 में गोहलपुर वार्ड का 12 एकड़ का बगीचा जो वर्तमान में क्षेत्रीय बस स्टेण्ड के बाजू में है गवर्नमेंट ने अपनी इम्पूमेंट ट्रस्ट की स्कीम में छुड़ा लिया था और उसके कुछप्लाट बना कर बेच दिये गये थे। उसको छुड़ाने में श्री श्यामसुन्दर बड़ेरिया, उपाध्यक्ष, सरवराहकार मोहनलाल जी पहारिया-और मैनेजर श्री नत्थूलाल जी बिचपुरिया ने बहुत लगन और सूझबूझ से यह गोहलपुर बगीचा का प्लाट इम्पूमेंट ट्रस्ट की स्कीम से छुड़ा लिया। जिसमें आज हजारों रुपये किराया आ रहा है। इसी प्लाट पर स्कूल बिल्डिंग बनाकर अब बाल विहार से लेकर 8वीं कक्षा तक स्कूल चल रहा है। बाबू मनमोहनदास जी के स्वर्गवास हो जाने के बाद उनके स्थान पर माननीया श्रीमती रत्नकुमारी देवी ट्रस्टी एवं अध्यक्ष बनाई गई, जो कि उनके मार्ग दर्शन में ट्रस्ट कुशल पूर्वक चल रहा है। वल्लभदास सरावगी के इस्तीफा देने पर उनके स्थान पर श्री उमाकांत जी सुहाने ट्रस्टी बनाये गये। भगवान बिहारी जी महाराज की सेवा पूजा उत्सव समैया विधिवत चल रहे हैं और गरीब अनाथ विधवाओं को परवरिश दी जा रही है।

इस ट्रस्ट में सन् 1944 से सन् 1971 तक स्व. श्री मोहनलाल जी पहारिया सरवराहकार रहे। सन् 1976 में श्री मोहनलाल जी पहारिया के त्याग पत्र के बाद श्री छोटेलाल पहारिया ट्रस्टी और सरवराहकार बनाये गये।

सन् 1971 से 1976 तक छोटेलाल पहारिया सरवराहकार रहे।

सन् 1976 से 1980 तक श्याम कुमार वरसैया सरवराहकार रहे।

सन् 1980 से 1982 तक श्री बाबूलाल पिपरसानिया सरवराहकार रहे।

सन् 1982 से 1986 तक फिर श्याम कुमार वरसैया सरवराहकार रहे।

सन् 1986 से 1989 तक श्री नर्मदा प्रसाद नगरिया सरवराहकार रहे।

अब वर्तमान में श्री उमाकांत सुहाने सन् 1989 से अभी तक सरवराहकार के पद पर विराजमान है। ट्रस्ट ने अपनी आय बढ़ाकर अनेकों बिल्डिंगों का निर्माण किया है। ट्रस्ट में विधिवत हिसाब किताब रखा जाता है। जिसका हर वर्ष आडिट होता है। अब वर्तमान समय में श्रीमती रत्नकुमारी देवी के कुशल निर्देशन में ट्रस्ट का सुचारू रूप में विधिवत कार्य चल रहा है।

श्रीमती रत्नकुमारी अमृत-महोत्सव

कुंवर लक्ष्मीचन्द स्मृति : अन्तर शालेय सांस्कृतिक प्रतियोगिता

श्रीमती रत्नकुमारी अमृत महोत्सव का शुभारंभ शनिवार 9 दिसम्बर 95 को स्व. कुंवर लक्ष्मीचंद स्मृति अंतर शालेय प्रतियोगिता से हुआ। शहीद स्मारक रंग मंच पर प्रातः 10.00 बजे से कार्यक्रम प्रारंभ हुआ, जो कि रात्रि 9.00 बजे तक चलता रहा, जिसमें समूह गीत, अभिनय गीत, समूह नृत्य की प्रतियोगितायें आयोजित की गई। इस सांस्कृतिक कार्यक्रम में नगर की लगभग 31 शिक्षण संस्थाओं ने भाग लिया।

कार्यक्रम समाप्ति के बाद श्रीमती चन्द्रप्रभा पटैरिया की अध्यक्षता में विजयी प्रतियोगियों को पुरस्कार वितरंण श्रीमती रत्नकुमारी जी ने किया।

श्रीमती रत्नकुमारी जी के यशस्वी पति स्व. कुंवर लक्ष्मीचंद जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर सेठ गोविन्ददास शताब्दी समारोह के अध्यक्ष श्री चन्द्रिका प्रसाद त्रिपाठी ने प्रकाश डाला। आभार प्रदर्शन श्री यू.डी. मिश्रा ने किया।

औपचारिकेत्तर शिक्षा केन्द्रों में भोजन वितरण

श्रीमती रत्नकुमारी देवी के जन्म दिवस 12 दिसम्बर 95 को उनके अच्छे स्वास्थ्य और दीर्घजीवन की कामना करते हुए अध्यक्ष श्रीमती चन्द्रप्रभा पटैरिया, महामंत्री श्रीमती साधना उपाध्याय एवं सुषमा चौकसे ने अमृत महोत्सव समिति की ओर से द्वारका नगर, सिद्ध बाबा, सालमाटी, कांचघर और संजय गांधी वार्ड के औपचारिकेत्तर शिक्षा केन्द्र के दो सौ बच्चों को भेजन के पैकेट वितरित किये। अनुदेशक मिथिलेश नायक, देवेन्द्र गुप्ता, माया ठाकुर और नागलक्ष्मी ने इस अवसर पर अतिथियों का स्वागत करते हुए श्रीमती रत्नकुमारी जी के सुसंस्कार छात्रों में प्रत्यारोपित करने का संकल्प लिया।

आशीर्वाद समारोह -

इसी क्रम में दोपहर 1.00 बजे अनन्त श्री विभूषित जगद्गुरु शंकराचार्य ज्योतिषपीठाधीश्वर बदरिकाश्रम स्वामी वासुदेवानन्द सरस्वती महाराज के सान्निध्य ससम आशीर्वाद समारोह कार्यक्रम शहीद स्मारक भवन में आयोजित किया गया, जिसमें महाराजश्री ने श्रीमती रत्नकुमारी जी को उनके दीर्घायु होने की कामना की और शाल श्रीफल भेंट कर उन्हें आशीर्वाद प्रदान किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्रीमती चन्द्रप्रभा पटैरिया ने की। समिति की महामंत्री श्रीमती साधना उपाध्याय ने कार्यक्रम का संचालन किया।

अ.भा. कवियत्री सम्मेलन

रात्रि में शहीद स्मारक भवन में श्रीमती रत्नकुमारी जी के सम्मान में मंचदीप संस्था के संस्थापक श्री मथुरा जैन ''उत्साही'' की प्रेरणा से अखिल भारतीय कवियत्री सम्मेलन हुआ, जिसके प्रमुख संयोजक प्रो.यू.डी. मिश्र ने श्रीमती रत्नकुमारी जी को शाल श्रीफल भेंट कर अभिनन्दन किया। अनुपस्थिति में यह सम्मान श्रीमती गोपाली जी ने राष्ट्रीय कवियत्री श्रीमती एकता शबनम से ग्रहण किया। इस कार्यक्रम में कोटा से पधारी एकता शबनम, अंजुम रहवर गुना, आरफा शबनम मैनपुरी, सुम्बुल फैजानी बलिया, अनु शर्मा ''सपन'' भोपाल, शबाना शबनम रतलाम आदि ने भाग लिया। कार्यक्रम का सफल संचालन एकता शबनम ने किया।

सांस्कृतिक संध्या समर्पण

श्रीमती रत्नकुमारी देवी अमृत महोत्सव समिति के तत्वावधान में 14 दिसम्बर 95 को शहीद स्मारक रंगमंच में सांस्कृतिक संध्या समर्पण समारोह आयोजित किया गया। कार्यक्रम रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. जे.पी. शुक्ला के मुख्य आतिथ्य में सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर डॉ. जे.पी. शुक्ला ने कहा कि ''जीजीबाई श्रीमती रत्नकुमारी जी ने जीवन के कठिनतम क्षणों में वीणपाणि की आराधना की है। इसलिये वे वर्तमान पीढ़ी के लिये प्रेरणा स्रोत बनीं।''

कार्यक्रम के प्रारंभ में मां सरस्वती की पूजा अर्चना की गई तथा उसके उपरांत श्रीमती रत्नकुमारी जी का पुष्पहारों से स्वागत तथा अभिनन्दन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्रीमती चन्द्रप्रभा पटैरिया ने की। सरस्वती वंदना शैला यवलकर, रेणु तिवारी, प्रभा शर्मा और ऋचा तिवारी ने किया। इस अवसर पर नगर की सांस्कृतिक, शैक्षणिक और सामाजिक संस्थाओं ने श्रीमती रत्नकुमारी जी का पुष्पहारों से स्वागत किया। राजेन्द्र तिवारी ऋषि ने काव्यांजलि समर्पित की। हितकारिणी कन्या उ.मा. शाला, दीक्षितपुरा की बालिकाओं ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया। सर्वश्री श्यामसुन्दर बड़ेरिया, प्रभुलाल करेचा, डॉ. उर्मिला जामदार, रामेन्द्र तिवारी, यू.डी. मिश्रा आदि ने भी जीजीबाई का स्वागत किया।

श्रीमती रत्नकुमारी देवी के अमृत महोत्सव पर शत् शत् नमन।

Subject to Jabalpur Jurisdiction

S.T. 040/JBP-I/XXXI/0941 26-12-77
C.S.T. JBP-I/XXXI/548 (C) 26-12-77

© Office 27640
26740
Resi. 26317

SHREE RAJESH SAW MILL

श्री राजेश सॉ मिल

टिम्बर मचेन्ट्स एण्ड सॉ मिल ओनर्स
शारदा चौक, नागपुर रोड
जबलपुर - 482001

Timber Merchants & Saw Mill Owners
Sharda Chowk, Nagpur Road
JABALPUR - 482001 (M.P.)

श्रीमती रत्नकुमारी देवी
अमृत महोत्सव पर
मंचदीप की
बधाई।

– मथुरा जैन "उत्साही"

MPST No. 040/KJBP/I/XXXII/3988/6
CST No./JBP/I/XXXII/2706-C

OFF. 20315
© 24015
RESI. 24612

GAJRATH STONE CRUSHER

Stone Crusher Workshop,
Erection Work, Screen Conveyor Eluvator

2289, Madan Mahal,
Near Simplex Factory,
Nagpur Road, Jabalpur

श्रीमती रत्नकुमारी देवी के अमृत महोत्सव
पर हमारी शुभकामनाएं

– अब्दुल बाकी

ए.एच.एम. कम्पनी

टेक्टर बीड़ी, मोतीनाला, जबलपुर

इस अवसर पर कुंवर लक्ष्मीचंद स्मृति स्पर्धा के सभी प्रतिभागियों को श्री बी.जी. नेमा के संचालन में अध्यक्षा श्रीमती चन्द्रप्रभा पटैरिया ने प्रमाण पत्र प्रदान किये। प्रथम स्थान प्राप्त दलों के तथा हित. संस्था के समस्त प्रभारी शिक्षकों को श्री एस.एन. पटैल के संचालन में मुख्य अतिथि डॉ. जे.पी. शुक्ला ने हित. सांस्कृतिक क्रीड़ा समिति एवं मनमोहनदास जगमोहनदास ट्रस्ट की ओर से शील प्रदान किया। सरस्वती शिक्षा मंदिर और करेचा नर्सरी के छात्रों को भी विशेष प्रस्तुति पुरस्कार दिये गये।

कुंवर लक्ष्मीचंद स्मृति स्पर्धा के परिणामों की भी इस अवसर पर घोषणा की गई जिसके अनुसार समूहगान में प्रथम स्थान शासकीय कन्या उच्च.माध्य. शाला, ब्यौहारबाग, द्वितीय स्थान श्री गुरु नानक कन्या उ.मा. शाला, मढ़ाताल तथा तृतीय स्थान बिदाम बाई गुगलिया बालिका विद्यालय ने प्राप्त किया।

अभिनय गीत में प्रथम स्थान आदर्श हितकारिणी प्राथमिक शाला, गोविन्दगंज, द्वितीय स्थान कस्तूरचंद हित. प्रायमरी शाला, घमापुर और तृतीय स्थान भगिनी निवेदिता शिशु वाटिका ने प्राप्त किया।

समूह नृत्य में प्रथम स्थान नवीन मिडिल स्कूल, उपरैनगंज, द्वितीय स्थान सरस्वती शिक्षा मंदिर, गुप्तेश्वर एवं तृतीय स्थान हित. उ.मा. कन्या शाला, गढ़ा ने प्राप्त किया।

इन प्रतियोगिताओं के निर्णायक मंडल में प्राचार्य गार्गीशरण मिश्र, प्राचार्य आनन्द जोशी, सी.डी. मोहर्रिर, रवि ठाकुर, करोड़ीलाल भट्ट, श्रीमती सविता ठाकुर, छवि नायक एवं डॉ. आभा दुबे आदि थे।

सांस्कृतिक समर्पण सत्र में सर्वप्रथम विजेता दलों ने प्रस्तुतियां दीं। इसके उपरांत महाराष्ट्र संगीत महाविघालय के नृत्य संकाय की ओर से रत्नकुमारी देवी रचित काव्य संग्रसह ''ऋतु पर्व'' पर आधारित नृत्य नाटिका का मंचन किया गया। श्रीमती साधना उपाध्याय के निर्देशन में पैंतीस कलाकारों द्वारा प्रस्तुत इस नृत्य नाटिका में श्रीमती मोहनी पांडे और मंजुल कुलकर्णी ने नृत्य संयोजन तथा नमन दत्त और पिंपल खरे ने संगीत संयोजन किया। मुरलीधर नागराज, रवीन्द्र चौकसे और सचिव उपाध्याय ने वाद्य संगत की। श्रीमती बीना ठाकुर और शिल्पी बड़कुल ने अतिथि कलाकारों के रुप में सहयोग प्रदान किया। वैशाली चांदरिकर, धनंजय परांजपे, हरीश कवीर, योगेश चौरे ने साज सज्जा और व्यवस्था का दायित्व निभाया। आभार प्रदर्शन मथुरा जैन ''उत्साही'' ने किया।

कॉक ब्राण्ड सिन्नर बिड़ी लि.

की ओर से

श्रीमती रत्नकुमारी जी

के

शतायु होने की कामना

करते है.

श्रीमती रत्नकुमारी देवी
के अमृत महोत्सव पर
शत् शत् नमन।

– गुलाबचन्द दर्शनाचार्य

मदन महल जनरल स्टोर्स

राइट टाऊन, जबलपुर

श्रीमती रत्नकुमारी देवी के अमृत महोत्सव पर शत् शत् नमन।

सेठ गोविन्ददास ट्रस्ट

राजा गोकुल दास महल कोतवाली वार्ड,
जबलपुर पिन – 482002 (म.प्र.)
फोन – 340800
फैक्स – 0761 342963

श्रीमती रत्नकुमारी देवी के अमृत महोत्सव पर शत् शत् नमन।

चमन डिपार्टमेंटल स्टोर्स

63-C किनसवे केंट जबलपुर
✆ 320344

सैनिक एवं सामान्य पोशाक वेशभूषा
एवं सामग्री विक्रेता

श्रीमती रत्नकुमारी देवी

अमृत महोत्सव

पर

मंचदीप

की बधाई।

मथुरा जैन ''उत्साही''

श्रीमती रत्नकुमारी देवी के
अमृत महोत्तसव पर हमारी शुभकामनाएं

- अब्दुल बाकी

ए.एच.एम. कम्पनी
टेक्टर बीड़ी

मोतीनाला जबलपुर

श्रीमती रत्नकुमारी देवी

के

अमृत महोत्सव

पर

शत् शत् नम।

गुलाबचन्द दर्शनाचार्य

मदनमहल जनरल स्टोर्स

राइट टाऊन, जबलपुर

राष्ट्रभाषा हिन्दी के अनन्य उपासक, प्रख्यात नाटय शिल्पी,
भारतीय लोक सभा के पितामह पद्मश्री सेठ गोविन्द दास के अमूल्य साहित्य के एक मात्र प्रकाशक वितरक :-

सेठ गोविन्द दास ट्रस्ट

राजा गोकुल दास महल
कोतवाली वार्ड
जबलपुर पिन - 482 002 (म.प्र.)
✆
340800

फेक्स
(0761) - 342963

हार्दिक शुभकामनाओं के साथ

दी चिराग ग्रुप ऑफ पब्लिकेशन

मध्यप्रदेश के प्रमुख प्रकाशक एवं मुद्रक

799, नेहरु वार्ड "गुरु-छाया"

जबलपुर (म.प्र.)

Pin - 482001

✆ 340830, 323237, 320460

प्रोपराइटर अजय इंदुरख्या

निवेदन है कि समस्त माननीय शिक्षकगण कक्षा नर्सरी प्रायमरी, मिडिल, हाई एवं हायर सेकेण्डरी कक्षाओं में सिर्फ चिराग की श्रेष्ठ पुस्तकें ही अनुशंसित करें।

श्री ठाकुर बिहारी जी महाराज कुचैनी मंदिर ट्रस्ट

जवाहरगंज जबलपुर - ४८२००२

फोन - ३४५७१६

ट्रस्ट का परिचय

- अध्यक्ष -

श्रीमती रत्न कुमारा देवी

- सरवराहकार -

श्री उमाकांत जी सोहाने

- उपाध्यक्ष -

श्री श्याम सुन्दर जी बड़ेरिया

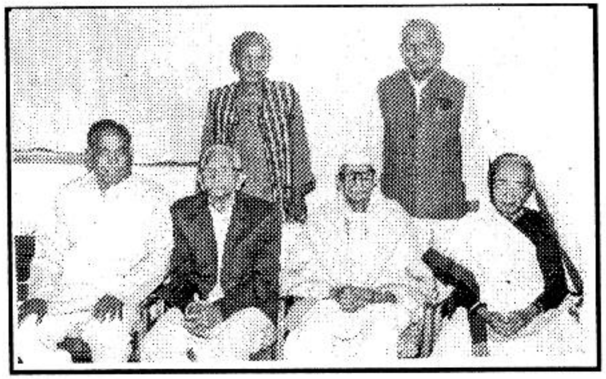

श्री ठाकुर विहारी जी महाराज कुचैनी मंदिर ट्रस्ट जबलपुर के ट्रस्टी गुणों के साथ अध्यक्षा श्रीमती रत्न कुमारी जी। साथ में हैं - सरवराहकार श्री उमाकांच सोहाने, श्री श्याम कुमार बरसैंया, उपाध्यक्ष श्री श्याम सुन्दर बड़ेरिया तथा श्री छोटेलल पहारिया एवं श्री नारायण दा।

- ट्रस्टी -

श्री श्याम कुमार बरसैंया

- ट्रस्टी -

श्री छोटेलाल पहारिया

- ट्रस्टी -

श्री नारायणदास असाटी

प्रदेश की प्रसिद्ध प्राचीन शिक्षण संस्था हितकारिणी सभा एवं उसके द्वारा संचालित समस्त महाविद्यालय, उ. मा. विद्यालय, माध्यमिक विद्यालय, प्राथमिक शालाओं, कम्प्यूटर सेन्टर एवं हितकारिणी महिला छात्रावास के सभी पदाधिकारीगणों तथा कर्मचारियों की ओर से संस्था की सभापति माननीया **श्रीमती रत्न कुमारी देवी** केअमृत महोत्सव पर शतायु होने की हृदय से कामना करते हैं।

राजेश अग्रवाल
मंत्री
हितकारिणी सभा
जबलपुर